श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश

सम्पादक : डॉ. अमित जैन
Mob. 9837394448, 9997889995
E-mail : amitraijain78@gmail.com

जून - प्रथम
अंक - 13

विक्रम संवत् - 2083
वीर संवत् - 2552
ई. सन् - 2026

Address
Here

श्रमण संघीय प्रथम पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्माराम जी म.

श्रमण संघीय द्वितीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म.

श्रमण संघीय तृतीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.

श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ अमृत महोत्सव वर्ष (1952 - 2026)

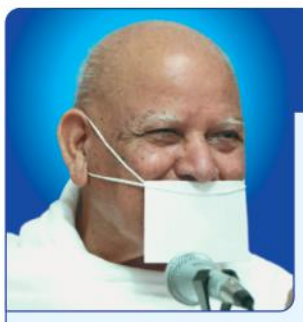

श्रमण संघीय तीर्थवासी ज्ञानी बने

- युग प्रधान आचार्य सम्राट् पूज्य श्री शिवमुनिजी म.सा.

श्रमण संघ का प्रत्येक तीर्थवासी अध्यात्म से जुड़ा हो उसका केन्द्र बिन्दु जीव आत्मा हो। जो व्यक्ति आत्मा को केन्द्र बिन्दु बनाता है, उसका वर्तमान जीवन आनंद, शांति व सुख से परिपूर्ण होता है। विभाव दशा में अजीव के निमित्त से बन्धे सभी कर्म क्षय होने प्रारंभ हो जाते हैं, उसकी भ्रांति दूर हो जाती है कि मुझे सुख भौतिक पदार्थों से मिलेगा। वह भौतिक पदार्थों को एकत्रित करने व उन्हें प्राप्त करने में जो ऊर्जा खर्च करता है उससे वह बच जाता है, क्योंकि उसे अपने जीव में जो अष्ठ गुणों की सम्पदा है उसका अनुभव ज्ञान प्राप्त हो जाता है। जीव के पास 8 गुणों की सम्पदा है।

जीव अनंत ज्ञान से युक्त है : जीव अज्ञान दशा में ज्ञान पुस्तकों व शास्त्रों में ढूंढता है। जबकि समस्त ज्ञानी पुरुषों ने सर्वप्रथम जीव और अजीव का भेद विज्ञान प्राप्त किया। अजीव अर्थात् शरीर को पराया मानकर शरीर को कर्म निर्जरा का साधन मानकर मन, बुद्धि, इन्द्रियों को संयमित कर इसका उपयोग पूर्व में बंधे कर्मों को क्षय करने के लिए किया।

जीव-अपने जीव का आत्मा का ध्यान कर जीव से ज्ञान प्राप्त कर अनंत ज्ञान को प्रकटाया।

अज्ञानी-जबकि अज्ञानी-बुद्धि में ज्ञान भरकर अहंकारी बन जाता है, कर्त्ता भाव में आ जाता है, बात-बात पर कषाय में चला जाता है।

ज्ञानी-जीव को केन्द्र बिन्दु बनाने वाला स्वरूप में स्थित होकर अनुभव ज्ञान से परिपूर्ण होकर प्रथम आत्मज्ञानी व मोह क्षय कर केवलज्ञानी बन जाता है। उसके लिए सभी तीर्थंकरों ने आत्म-ध्यान से ज्ञान प्राप्त किया। अतः जीव को केन्द्र बिन्दु बनाने वाला ज्ञानी।

अनंत सुख-ज्ञानी वह है जो जीव में सुख ढूंढता है। जीव में शक्ति है, इस पर श्रद्धा कर अपनी शक्ति को प्रकटाता है।

अज्ञानी कौन-जो साता में सुख मानता है, जीवन भर साता को पाने के लिए पुरुषार्थ करता है। साता को पाने की चाहना करता है। हर जगह शरीर के लिए अनुकूलता चाहता है। प्रतिकूलताओं का विरोध करता है और मिथ्यात्व व मोह का पोषण करता है। उसे सुख का पता मालूम न होने से वह जीवन भर सुख के लिए साताकारी स्थान, साताकारी भोजन, अनुकूल साथी ढूंढने में अपनी शक्ति लगाता है, न मिलने पर वह आर्त्त व रौद्र ध्यान करता है। साता के लिए पुण्य कर्मों का इन्तजार करता है या पुण्य कर्म कमाता है। (क्रमशः)

अध्यक्षीय

योग, पर्यावरण और आत्मजागरण : स्वस्थ समाज की त्रिवेणी

- अतुल जैन - राष्ट्रीय अध्यक्ष
E-mail : ajvk1973@gmail.com

प्रिय समाजबंधुओं,

समय निरंतर परिवर्तनशील है और प्रत्येक कालखंड अपने साथ कुछ विशेष संदेश लेकर आता है। वर्तमान समय में जहाँ विश्व अनेक प्रकार की मानसिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना कर रहा है, वहीं भारतीय संस्कृति एवं जैन दर्शन मानवता को संतुलित, संयमित और शांतिपूर्ण जीवन की दिशा प्रदान कर रहे हैं।

21 जून को सम्पूर्ण विश्व में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाएगा। योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि शरीर, मन और आत्मा के संतुलन का विज्ञान है। जैन दर्शन में भी ध्यान, प्राणायाम, आत्मचिंतन, संयम और साधना को जीवन का अभिन्न अंग माना गया है। आज की तनावपूर्ण जीवनशैली में योग मनुष्य को स्थिरता, सकारात्मकता और आत्मबल प्रदान करता है। यदि योग को केवल एक दिवस तक सीमित न रखकर दैनिक जीवन का हिस्सा बनाया जाए, तो व्यक्ति का मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य दोनों सुदृढ़ हो सकते हैं।

विश्व पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से भी जैन धर्म के सिद्धांत अत्यंत प्रासंगिक हैं। अहिंसा, अपरिग्रह और जीवदया का संदेश प्रकृति संरक्षण का ही व्यापक स्वरूप है। आज पर्यावरण असंतुलन, प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन पूरी मानवता के लिए चिंता का विषय बन चुके हैं। ऐसे समय में प्रत्येक व्यक्ति का यह दायित्व है कि वह वृक्षारोपण, जल संरक्षण, प्लास्टिक मुक्त जीवनशैली और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण हेतु जागरूक बने। प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता ही आने वाली पीढ़ियों के सुरक्षित भविष्य की आधारशिला है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम आधुनिकता और आध्यात्मिकता के बीच संतुलन स्थापित करें। तकनीक जीवन को सुविधाजनक बना सकती है, परंतु जीवन को सार्थक बनाने का कार्य केवल संस्कार, संयम और सदाचार ही कर सकते हैं। समाज तभी सशक्त बनता है जब उसके नागरिक स्वस्थ, जागरूक और नैतिक मूल्यों से प्रेरित हों।

जैन कॉन्फ्रेंस निरंतर संगठन, सेवा, संस्कार और समाज जागरण के विविध आयामों पर कार्य कर रही है। श्रमण संघ स्थापना के अमृत महोत्सव वर्ष के अंतर्गत देशभर में अनेक रचनात्मक एवं प्रेरणादायी कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। हमें आवश्यकता है कि समाज का प्रत्येक वर्ग-युवा, महिला, प्रबुद्धजन एवं मातृशक्ति-इन गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता निभाए और संगठन को और अधिक सशक्त बनाए।

आइए, हम सब मिलकर योग को जीवन की साधना, पर्यावरण संरक्षण को अपना कर्त्तव्य और आत्मजागरण को जीवन का उद्देश्य बनाएं। स्वस्थ विचार, स्वच्छ पर्यावरण और संस्कारित समाज ही उज्ज्वल भविष्य का आधार बन सकते हैं। आप सभी के स्वस्थ, शांतिमय एवं मंगलमय जीवन की हार्दिक शुभकामनाएँ।

सम्पादकीय

दान का संतुलन और समाज का भविष्य!

- डॉ. अमितराय जैन - राष्ट्रीय महामंत्री

जैन समाज की दान परम्परा भारतीय संस्कृति की अत्यंत प्राचीन और गौरवशाली परम्पराओं में से एक है। जैन श्रावकों के लिए अपनी आय का एक अंश धर्म, समाज और लोक कल्याण के कार्यों में समर्पित करना केवल उदारता नहीं, बल्कि एक नैतिक उत्तरदायित्व माना गया है। इसी भावना ने जैन समाज को सदियों तक धर्म, शिक्षा, साहित्य, चिकित्सा और सेवा के क्षेत्रों में अग्रणी बनाए रखा।

जैन समाज में दान के अनेक स्वरूप रहे हैं-धर्म संरक्षण, जिनालयों एवं स्थानकों का संवर्धन, पुस्तकालयों का संचालन, प्राचीन पांडुलिपियों का संरक्षण, विद्यार्थियों की सहायता, विधवा एवं आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों का सहयोग, तथा समाज के उत्थान हेतु विभिन्न सेवाकार्य। यह सभी प्रवृत्तियाँ किसी भी समाज की दीर्घकालिक शक्ति का आधार होती हैं।

विगत कुछ समय में जीवदया के क्षेत्र में दान की प्रवृत्ति अत्यधिक बढ़ी है। पशुओं को कसाइयों से छुड़वाना, ईद आदि मुस्लिम त्यौहार के आस-पास मंडियों से बकरा खरीदकर संरक्षण देना अथवा बकराशालाओं या गोशालाओं में उनका पालन करना निस्संदेह जैन धर्म की करुणा और अहिंसा का परिचायक है। परंतु यह भी विचारणीय है कि समाज की दानशक्ति का अत्यधिक भाग यदि केवल एक ही दिशा में केंद्रित हो जाए, तो अन्य आवश्यक सामाजिक और शैक्षिक क्षेत्र उपेक्षित होने लगते हैं। कई बार संसाधनों के अभाव में बकराशालाओं/गोशालाओं के संचालन में भी कठिनाइयाँ सामने आती हैं। इसलिए दान में संतुलन और दूरदृष्टि दोनों आवश्यक हैं।

आज यह भी आवश्यक है कि जैन समाज अपने शैक्षणिक और चिकित्सीय संस्थानों की पुनर्समीक्षा करे। समाज पहले से ही अनेक विद्यालय, महाविद्यालय और चिकित्सालय संचालित कर रहा है। वर्तमान समय में सरकार द्वारा गरीब वर्गों के लिए स्वास्थ्य बीमा योजनाओं के माध्यम से बड़े अस्पतालों में भी उपचार उपलब्ध कराया जा रहा है। ऐसे में जैन संस्थाओं को समाज के निर्धन वर्गों के लिए छात्रवृत्ति, विशेष सहायता और सामाजिक सुरक्षा जैसे अधिक प्रभावी प्रावधानों पर ध्यान देना चाहिए। साथ ही सामुदायिक केंद्र, सभागार और बहुउद्देश्यीय संस्थानों का ऐसा स्वरूप विकसित किया जाना चाहिए जो धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ-साथ आर्थिक रूप से भी आत्मनिर्भर बन सकें।

(शेष पृष्ठ 5 में)

ALDACO
AIM HIGH

Sudershan Jain
National Chairman – Jan Kalyan Yojana
Jain Conference, New Delhi

DEALS IN NON LEATHER FOOTWEAR
ALDACO FOOTWEAR

9310899901 | Aldacofootwear@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के पदाधिकारी साधु-साध्वीवृंद

युगप्रधान, ध्यानयोगी, आचार्य सम्राट् परम पूज्य श्री शिवमुनिजी म.सा.
आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.

उपाध्याय मण्डल

परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म.सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म.सा. 'प्रथम'

प्रवर्तक मण्डल

परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा.

मंत्री मण्डल

परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म.सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म.सा. 'कमलेश' (संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

सलाहकार मण्डल

परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म.सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म.सा. 'निर्भय'

प्रवर्तिनी मण्डल

परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म.सा.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-विश्वस्त मण्डल

श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर - चेयरमैन	93021 03817
श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर	93434 83838
श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पूना	98505 00015
श्री सुभाष ओसवाल जैन, नई दिल्ली	98110 45440
श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336
श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035
डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
श्री प्रकाश धारीवाल जैन, पुणे	98222 42795
श्री अशोक मेहता जैन, सूरत	98251 19082
श्री उगमचंद गांधी जैन, इचलकरंजी	93260 22525
श्री विनय कुमार जैन, पानीपत	83968 00000
श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
श्री राजीव जैन 'सी.ए.', दिल्ली	98110 42280
श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, छत्रपति संभाजीनगर	82862 00000
श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
श्री सुनील बाफना जैन, घोड़नदी	98505 67010

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की मातृसंस्था श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली सम्माननीय पदाधिकारीगण-कार्यकाल वर्ष : 2025-27

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अतुल जैन, दिल्ली	98110 75336
राष्ट्रीय महामंत्री : प्रो. डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष : श्री विनयकुमार जैन, पानीपत	83968 00000
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री विजय जैन, पानीपत	98966 00022
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : श्री नरेश बोहरा जैन, मुंबई	76665 40600
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष : श्री जसवंत जैन, दिल्ली	98104 35108
राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष : श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री जे. डी. जैन, गाज़ियाबाद	98100 06462
श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन, पाली	98290 25729
श्री अविनाश चोरड़िया जैन, नई दिल्ली	93138 13899
पद्मश्री श्री नेमनाथ जैन, इंदौर	98930 32777
श्री पारस मोदी जैन, मुंबई	98200 60530

राष्ट्रीय पर्यवेक्षण समिति

राष्ट्रीय पर्यवेक्षक : श्री सुभाष ओसवाल जैन, दिल्ली	98100 45440
राष्ट्रीय पर्यवेक्षक : श्री सत्यभूषण जैन, दिल्ली	98111 97000

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक

श्री महावीर रांका जैन, पोलुर	94442 04046
श्री विमलप्रकाश जैन, जालंधर सिटी	98151 84811
श्री संजय जैन, दिल्ली	98111 67770
श्री डिपिन नेमनाथ जैन, इन्दौर	78699 99222
श्री विजयकांत कोठारी जैन, पुणे	98230 82152

राष्ट्रीय समन्वय समिति

श्री प्रशांत जैन, 'गांधरा' दिल्ली (मुख्य समन्वयक)	98101 21450
श्री सुरेशकुमार लुणावत जैन, चेन्नई (ज़ोन - 1)	98842 21003
श्री राकेश जैन 'लक्की', लुधियाना (ज़ोन - 2)	98150 20661
श्री कंवरलाल सूरिया जैन, भीलवाड़ा (ज़ोन - 3)	94141 13056
श्री ईश्वर बाबूसेठ बोरा जैन, अहिल्यानगर (ज़ोन - 4)	98237 99998
श्री जयंतिलाल कूकड़ा जैन, सूरत (ज़ोन - 5)	98251 35744

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष

श्री महेन्द्र बोकरिया जैन, दिल्ली	98681 25710

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री सुरेशचंद छल्लाणी जैन, बैंगलोर	93412 32573
श्री पुखराज मेहता जैन, बैंगलोर	98446 77725
श्री एम. गौतमचंद गुगलिया जैन, हैदराबाद	92463 61008
श्री दिनेश कुमार भलगट जैन, चेन्नई	98402 64888
श्री राजन जैन, लुधियाना	98140 77445
श्री विमलचंद जैन, अम्बाला	94667 01008
श्री पुष्कर जैन, मेरठ	94122 06374
श्री महावीर प्रसाद जैन, दिल्ली	98113 58110
श्री विपिन आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली	99113 00888
श्री जयकुमार जैन, दिल्ली	98106 72111
श्री रामनिवास जैन, दिल्ली	98112 95715
श्री रमेश जैन 'शामड़ी', दिल्ली	93509 16150
श्री नेमीचंद धाकड़ जैन, उदयपुर	95117 05291
श्री महेश डाकोलिया जैन, इन्दौर	77738 66000
श्री ललित मोदी जैन, नाशिक	94222 46500
श्री सतीश बाबूसेठ लोढ़ा जैन, अहिल्यानगर	94222 22138
श्री सुनील मोहनलाल चोपड़ा जैन, नाशिक	94239 63100
श्री जीवनराज पुनमिया जैन, इचलकरंजी	94205 85878
श्री कीर्ति दुग्गड़ जैन, पुणे	98220 34344
श्री शंभुलाल ललवानी जैन, अहमदाबाद	99783 47800

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री

श्री एस. के. जैन 'सी.ए.', दिल्ली	98102 78217

जीवन प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर	93434 83838
राष्ट्रीय मंत्री : श्री अशोककुमार धोका जैन, बैंगलोर	98440 58123

मानव सेवा योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री प्रकाश भटेवरा जैन, इन्दौर	98270 31032
वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री मनीष बाफना जैन, सूरत	93749 86671
राष्ट्रीय मंत्री : श्री जितेन्द्र चोपड़ा जैन, इन्दौर	93021 27805

जीव दया योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री मनोहरलाल लोढ़ा जैन, मावली सिंधु	94224 59362
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रोशनलाल वड़ाला जैन 'सी.ए.', नवी मुंबई	98200 72121

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री नरेश आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली	95400 02778
चेयरमैन : श्री सुरेश जैन, दिल्ली	98112 39872
वाईस चेयरमैन : श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री सुरेशचंद जैन, दिल्ली	98117 48722
राष्ट्रीय मंत्री : श्री नरेन्द्र जैन, दिल्ली	98101 63165

वेय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अशोक रांका जैन, बैंगलोर	99455 41200
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रतनचंद सिंघवी जैन, बैंगलोर	93425 97955

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, छत्रपति संभाजीनगर	82862 00000
राष्ट्रीय मंत्री : श्री शैलेष शोभाचंद संचेती जैन, बैजापुर	94214 18121

जैन कॉन्फ्रेंस आत्म-ध्यान योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री शशिकांत 'पिन्टू' कर्नावट जैन, मालेगांव	98239 55515
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रोहित छाजेड़ जैन, छत्रपति संभाजीनगर	94207 64456

हर प्रांत जैन भवन योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अशोक कुमार एन. पगारिया जैन, पुणे	94220 36831
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री विनय कुमार नाहटा जैन, दिल्ली	98110 12512
राष्ट्रीय मंत्री : श्री प्रफुल्ल कोठारी जैन, पुणे	90110 17777

राष्ट्रीय जन कल्याण योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : सतिन्दर वीर जैन	98110 70722
राष्ट्रीय चेयरमैन : सुदर्शन जैन	93108 99904
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : संजय जैन	98187 25000
राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष : नंदीवर्धन जैन	98110 39625
राष्ट्रीय मंत्री : कनिका संदीप जैन	96549 73690

विहारधाम योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री कांतिलाल चोपड़ा जैन, नाशिक	94229 44800
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री तनसुख झामड़ जैन, छत्रपति संभाजीनगर	98226 59910
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मुकेश जैन 'सांड़', मोहाली	93185 93599

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय डिजिटाईजेशन योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री सुभाष जैन 'लिली', गिदड़वाहा	98146 99393
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री राजीव सुनील सांखला जैन, बैंगलोर	98445 46014
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : श्री संजय जैन 'चिली', दिल्ली	93501 32274
राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री राकेश जैन, दिल्ली	98101 93101
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनधीर जैन, लुधियाना	98141 05020

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय मीडिया संचार योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री संजय जैन, दिल्ली	93191 87434
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री अजय जैन ' प्रथम', दिल्ली	97117 74004
राष्ट्रीय मंत्री : लक्ष्मीलाल वीरवाल जैन	94604 45060

राष्ट्रीय युवा शाखा

अध्यक्ष : श्री विपुल जैन, दिल्ली	87662 14456
चेयरमैन : श्री अंकुर जैन, दिल्ली	98711 98111
कार्याध्यक्ष : श्री कमलेश नाहर जैन, अहमदाबाद	93767 37111
वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री मंजीत शांतिलाल कोठारी जैन, सूरत	93745 44138
महामंत्री : श्री अमित कांतिकुमार लोढ़ा जैन, छत्रपति संभाजीनगर	91522 11555
कोषाध्यक्ष : श्री मुनीष पकंज जैन, दिल्ली	99998 38345

राष्ट्रीय महिला शाखा

अध्यक्षा : श्रीमती संतोष सुरेश जैन, दिल्ली	98687 04326
चेयरमैन : श्रीमती अनामिका कुलदीप तलेसरा, सूरत	94278 08401
वाईस चेयरमैन : श्रीमती मीनाक्षी विनय जैन, दिल्ली	98187 44166
वरिष्ठ उपाध्यक्षा : श्रीमती कुसुम महावीरप्रसाद जैन, सोनीपत	92515 74016
महामंत्री : श्रीमती रीचा संदीप जैन, लुधियाना	79737 96548
कोषाध्यक्षा : श्रीमती उर्मिल नरेश जैन, दिल्ली	92504 18306

प्रांतीय अध्यक्ष

श्री प्रकाश बुरड़ जैन (कर्नाटक - ज़ोन 1)	98456 71449
श्री विनोद कुमार कीमती जैन (तेलंगाना - ज़ोन 1)	98490 11350
श्री वी. धर्मीचन्द जैन (तमिलनाडु - ज़ोन 1)	94444 31536
श्री अनिल जैन (पंजाब - ज़ोन 2)	98141 40491
डॉ. श्री रामनिवास जैन (हरियाणा - ज़ोन 2)	92541 19621
श्री कीमतीलाल जैन (उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड - ज़ोन 2)	97203 57112
श्री जितेन्द्र जैन (दिल्ली - ज़ोन 2)	98100 62967
श्री आनंद चपलोत जैन (राजस्थान - ज़ोन 3)	94609 66507
श्री हुलास बेताला जैन (मध्य प्रदेश - ज़ोन 3)	96696 97797
डॉ. आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल - ज़ोन 3)	98302 49151
श्री मोहनलाल लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र-ज़ोन 4)	94222 50478
श्री नितिन बेदमुथा जैन (मुंबई-पुणे - ज़ोन 5)	93710 75787
श्री सम्पत खाविया जैन (गुजरात - ज़ोन 5)	98250 47321

राष्ट्रीय मंत्री

श्री कन्हैयालाल सुराणा जैन, बैंगलोर	93412 21774
श्री सम्पतराज कोठारी जैन, सिकन्दराबाद	92461 58452
श्री सुरेश गादिया जैन, चेन्नई	98402 00916
श्री राजेन्द्र बोहरा जैन, चेन्नई	98406 00003
श्री अरूण कुमार जैन, लुधियाना	98155 66885
श्री रवीन्द्र जैन, पानीपत	98960 92861
श्री नितिन जैन, बड़ौत	99993 99382
श्री नरेश जैन 'रिंढ़ाना', दिल्ली	98100 66701
श्री दिलीप रूणवाल जैन, दिल्ली	98112 05545
श्री दिनेश एम. सुराणा जैन, दिल्ली	93100 54428
श्री नरेश लोढ़ा जैन, उदयपुर	93222 56788
डॉ. सुधीर जैन, कोटा	94141 79700
श्री जिनेश्वर जैन, इन्दौर	99818 50900
श्री राजेन्द्र लोढ़ा जैन, इन्दौर	94250 62147
श्री मीठालाल कांकरिया जैन, छत्रपति संभाजीनगर	98226 71574
श्री वसंत लोढ़ा जैन, अहिल्यानगर	94212 05000
श्री पारस दुग्गड़ जैन, धुलिया	94231 93447
श्री कैलाश प्रकाश बाफना जैन, छत्रपति संभाजीनगर	93726 66999
श्री सुरेश सिंघवी जैन, मुंबई	98212 87789
श्री विलास राठौड़ जैन, पुणे	98901 74007
श्री आकाश मादरेचा जैन, सूरत	94287 45537

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री

श्री दीपक जैन, दिल्ली	93508 70065
श्री संजय जैन 'निशा', लुधियाना	94172 53101
श्री नेमीचंद सोलंकी जैन, पुणे	93710 89896
श्री संदीप जैन 'सन्नी', जम्मू	94191 90527
श्री महेन्द्र जैन, सवाई माधोपुर	94626 72015

राष्ट्रीय संगठन मंत्री

श्री जयप्रकाश ललवानी जैन, चेन्नई	99412 45660
श्री संजीव जैन 'आनंदमु', दिल्ली	93122 40901
श्री नितिन चोपड़ा जैन, पुणे	98224 07446
श्री प्रकाश कोठारी जैन, खार, मुंबई	98200 83919
श्री त्रिलोक जैन, दिल्ली	98681 06607

प्रांतीय महामंत्री

श्री नेमीचंद दलाल जैन (कर्नाटक)	99649 72251
श्री किशोर कुमार मुथा जैन (तेलंगाना)	92473 99003
श्री एम. राजेशकुमार रांका जैन (तमिलनाडु)	99949 16455
श्री पंकज जैन (पंजाब)	98150 00791
श्री संजय जैन (हरियाणा)	98130 50937
श्री अनुराग जैन (उत्तर प्रदेश)	98371 09567
श्री ललित ओसवाल जैन (दिल्ली)	98111 38968
श्री लोकेश धाकड़ जैन (राजस्थान)	98280 50143
श्री पीयूष जैन (मध्य प्रदेश)	94254 00121
श्री राजेश कुमार भुरट जैन (पश्चिम बंगाल)	93310 09391
श्री शांतिलाल इंदरचंद दुग्गड़ जैन (महाराष्ट्र)	98220 79225
श्री गणेश ओसवाल जैन (मुंबई-पुणे)	99218 79613
श्री विनोद कुमार धोका जैन (गुजरात)	94279 30764

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार समिति

एडवोकेट श्री नरेश कुमार जैन, रानियां	90504 00009
एडवोकेट श्री सुनील जैन, चण्डीगढ़	98141 90422
एडवोकेट श्री नवीन जैन, पानीपत	90347 19097

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार समिति

सदस्य : श्री संजय तारांचद कोटेचा जैन, जलगांव	99237 11711
सदस्य : श्री संजय बोहरा जैन, मुंबई	98339 57170
सदस्य : श्री अतुल चोरड़िया जैन, वाघोली, पुणे	80876 35657
सदस्य : श्री रवि जैन, दिल्ली	99996 10010
सदस्य : श्री रमेश कुमार जैन, 'शास्त्री' जीन्द	92554 30824

वरिष्ठ मार्गदर्शक

श्री प्रेमचंद जैन, गुरुग्राम (हरियाणा)	92113 08367
श्री जसवंत दलाल जैन, बैंगलोर (कर्नाटक)	98863 88021
श्री शांतिलाल पोखरणा, बैंगलोर (कर्नाटक)	98451 55799
श्री महावीरचंद भण्डारी जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)	98401 96758
श्री विमल धारीवाल जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)	94433 32330
श्री पदमचंद बागमार जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)	94440 77990
श्री अरिदमन जैन, लुधियाना (पंजाब)	95012 33866
श्री जतिन्द्र जैन, लुधियाना (पंजाब)	98559 39174
श्री विश्वा जैन, लुधियाना (पंजाब)	98140 88391
श्री राजेश जैन, लुधियाना (पंजाब)	98761 71831
श्री अजय जैन, पानीपत (हरियाणा)	94161 22219
श्री जगदीशचन्द्र जैन, पानीपत (हरियाणा)	98962 00081
श्री जगदीश जैन, रोहतक (हरियाणा)	93556 71998
श्री राजिन्द्र जैन, पानीपत (हरियाणा)	99963 33388
श्री राजीव जैन, पानीपत (हरियाणा)	98122 00002
श्री राहुल जैन, करनाल (हरियाणा)	99927 33822
श्री संदीप जैन, सिरसा (हरियाणा)	92157 37705
श्री मनमोहन जैन, मुज़फ्फरनगर (उत्तर प्रदेश)	98370 67082
श्री सुशील जैन, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)	98100 78214
श्री पारस जैन, मेरठ (उत्तर प्रदेश)	99270 62009
श्री जयप्रकाश जैन, बड़ौत (उत्तर प्रदेश)	99974 55741
श्री अनिल जैन 'बखेता', रोहिणी, दिल्ली	93124 33320
श्री राजकुमार जैन, रोहिणी, दिल्ली	98112 52316
श्री विजय जैन, रोहिणी, दिल्ली	99994 73873
श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, रोहिणी, दिल्ली	98371 74345
श्री देवेन्द्र जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	99716 65599
श्री सत्यनारायण जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	92158 99904
श्री प्रदीप जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	99999 97513
श्री रोशनलाल जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	98100 50467
श्री सतपाल जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	98102 64999
श्री अशोक जैन 'जयचंदा' ऋषभ विहार, दिल्ली	93109 89999
श्री भूपेन्द्र जैन, अशोक विहार, दिल्ली	98110 16545
श्री लवकुमार जैन, वीरनगर, दिल्ली	88266 72626
श्री नरेश जैन, पंजाबी बाग, दिल्ली	98111 30285
श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, शक्तिनगर, दिल्ली	98100 21710
श्री राजकुमार जैन, शास्त्रीनगर, दिल्ली	98114 04140
श्री मदनलाल जैन 'शामडी', प्रशांत विहार, दिल्ली	98737 76896
श्री पंकज जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली	88600 98595
श्री संजय जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली	98187 25000
श्री चक्रेश जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली	98112 33462
श्री बजरंगलाल जैन, दिल्ली	93122 62192
श्री अशोक पालरेचा जैन, ब्यावर (राजस्थान)	94601 71190
श्री ज्ञानचंद विनायकिया जैन, ब्यावर (राजस्थान)	98140 10385
श्री महावीर कुमार बाफना जैन, ब्यावर (राजस्थान)	94147 38976
श्री गौतम संचेती जैन, ब्यावर (राजस्थान)	94142 58370
श्री मांगीलाल लोढ़ा जैन, उदयपुर (राजस्थान)	88753 26779
श्री शंकरलाल डांगी जैन, उदयपुर (राजस्थान)	94628 83336
श्री दिनेशचन्द्र चोरड़िया जैन, उदयपुर (राजस्थान)	94141 66639
श्री सिद्धराज सिंघवी जैन, निम्बाहेड़ा (राजस्थान)	98298 86701
श्री भूपेन्द्र सिंह पगारिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94146 17494
श्री पकंज कुमार सूरिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94141 11902
श्री मीठालाल सिंघवी जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94141 12134
श्री दीपक कुमार सूरिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	98293 47007
श्री राजेन्द्र गोखरू जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94141 84005
श्री मनमोहन गांधी जैन, पाली (राजस्थान)	94143 26293
श्री अम्बालाल लोढ़ा जैन, राजसमन्द (राजस्थान)	98290 40800
श्री अभय पोखरणा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	98930 33345
श्री अचल चौधरी जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	98260 20161
श्री अनिल बरड़िया जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	93021 22995
श्री हेमंत बोहरा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	94074 13922
श्री राजकुमार जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	94253 19691
श्री सुरेश देशलहरा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	98270 31960
श्री सुभाष विनायकिया जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	96302 55540
श्री चन्द्रप्रकाश चोरड़िया जैन, उज्जैन (मध्य प्रदेश)	73662 31275
श्री इन्द्रमल पटवा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश)	98272 28737
श्री महेन्द्र बोथरा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश)	98270 06500
श्री सुजानमल कोटेचा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश)	98272 08682
श्री रवि सुराणा जैन, झाबुआ (मध्य प्रदेश)	94251 01014
श्री यशवंत सिंह बाफना जैन, झाबुआ (मध्य प्रदेश)	94254 87623
श्री शांतिलाल चोरड़िया जैन, नाशिक (महाराष्ट्र)	98909 52621
श्री संतोष मंडलेचा जैन, नाशिक (महाराष्ट्र)	99234 78889
श्री शोभाचंद संचेती जैन, छत्रपति संभाजीनगर (महाराष्ट्र)	94051 07851
श्री हसमुख बंबकी जैन, रत्नागिरी (महाराष्ट्र)	94224 29611
श्री जीवनराज पुनमिलया जैन, इचलकरंजी (महाराष्ट्र)	92258 31765
श्री हीरालाल पगारिया जैन, अहिल्यानगर (महाराष्ट्र)	
श्री चतरलाल लोढ़ा जैन, मुंबई (महाराष्ट्र)	98201 11839
श्री महावीरचंद तातेड़, मुंबई (महाराष्ट्र)	98699 09374
श्री पन्नालाल कोठारी जैन, मुंबई (महाराष्ट्र)	
श्री पारस छाजेड़ जैन, मुंबई (महाराष्ट्र)	98212 20220
श्री कांतिलाल बोथरा जैन, पुणे (महाराष्ट्र)	87882 35525
श्री पोपटलाल ओस्तवाल जैन, पुणे (महाराष्ट्र)	98230 81825
श्री सुभाष सुराणा जैन, पुणे (महाराष्ट्र)	97662 90002
श्री ओमप्रकाश मांडोत जैन, अंकलेशवर (गुजरात)	99250 20407
श्री प्यारचंद कोठारी जैन, सूरत (गुजरात)	93745 35686
श्री चांदमल छाजेड़ जैन, मेहसाना (गुजरात)	98241 62334
श्री विनोद कुमार सूर्या जैन, खेड़ब्रह्मा (गुजरात)	93277 57610
श्री हीरालाल खाविया जैन, अहमदाबाद (गुजरात)	94270 31776
श्री चांदमल छाजेड़ जैन, मेहसाना (गुजरात)	98241 62334
श्री जयंतिलाल कोठारी जैन, अहमदाबाद (गुजरात)	

देश में विराजित पूज्य संत-साध्वीजी म. के पावन चरणों में
कोटि-कोटि वंदन एवं श्रद्धापूर्ण नमन

NAMO eWaste

Namo e waste Management Ltd.
E waste & lithium in battery recycling
EPR facility
8130393628 admin@namoewaste.com

Vardhman Recycling LLP
Old vehicles recycling with certificate of disposal
Plastic recycling EPR facility
8130393611 vardhmanautorecycling@gmail.com

नरेश आनन्दप्रकाश जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
ज्ञान प्रकाश योजना, जैन कॉन्फ्रेंस

रचना नरेश जैन
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक
जैन कॉन्फ्रेंस, राष्ट्रीय महिला शाखा

समाजरत्न दानवीर भामाशाह
लाला आनन्द प्रकाश जी जैन
महिलारत्न
स्व. श्रीमती कमलेश आनन्द प्रकाश जी जैन

कथा-कहानी

योगिराज की कहानियाँ
प्रवर्तक श्री सुभद्र मुनि

भावना का प्रतिबिम्ब

मन की सत्ता अदृश्य है। उसे आप देख नहीं पाते हैं। मन भले ही न दिखे परन्तु उसके कार्य का प्रभाव पूरे दृश्यमान जगत पर पड़ता है। तभी तो कहा है - भावना की छाया से अग-जग प्रभावित होता है। कैसे और क्यों कर? यह प्रस्तुत कहानी में गुरुदेव योगिराज ने बताया था।

राजा भोज की सभा में एक व्यापारी ने प्रवेश किया। राजा ने उसे देखा तो अनचाहे में सोचा - इसका सब कुछ छीन लिया जाये? व्यापारी के जाने के बाद राजा ने सोचा - मैं हमेशा न्याय देता हूँ प्रजा को। आज यह कालुष्य क्यों आ गया कि व्यापारी की सम्पत्ति छीन ली जाये? उसने अपने विचक्षण बुद्धि मंत्री से यह सवाल किया। मंत्री ने कहा - इसका सही जवाब कुछ दिन बाद दे पाऊंगा। राजा ने स्वीकार कर किया।

मंत्री विलक्षण बुद्धि का था। वह इधर-उधर के सोच-विचार में अपना समय न खोकर सीधा व्यापारी से मैत्री गांठने पहुंचा। व्यापारी से मित्रता कर पूछा - तुम इतने चिंतित क्यों हो? तुम तो भारी मुनाफे वाला चंदन का व्यापार करते हो।

व्यापारी बोला - धारानगरी सहित अनेक नगरों में चंदन की गाड़ियाँ भरे फिर रहा हूँ पर चंदन नहीं बिका। बहुत सारा धन इसमें फँसा पड़ा है। अब नुकसान से बच पाने का कोई उपाय नहीं है। व्यापारी की बात सुन मंत्री ने पूछा - क्या कोई भी रास्ता नहीं बचा है? व्यापारी हँसकर कहने लगा - अगर राजा भोज की मृत्यु हो जाये तो उसके दाह संस्कार के लिए मेरा सारा चंदन बिक सकता है।

मंत्री को राजा को उत्तर देने की सामग्री मिल चुकी थी।

अगले दिन मंत्री ने व्यापारी से कहा - तुम प्रतिदिन राजा का भोजन पकाने के लिए एक मन चंदन दे दिया करो और नकद पैसे उसी समय ले लिया करो। व्यापारी मंत्री के आदेश को सुनकर बहुत खुश हुआ। वह मन ही मन राजा के शतायु होने की कामना करने लगा।

एक दिन राजा की सभा जुड़ी थी। व्यापारी दोबारा राजा को वहाँ दिखाई दे गया तो राजा सोचने लगा यह कितना मोहक व्यक्ति है, इसे क्या पुरस्कार दिया जाये?

राजा ने मंत्री से दोबारा कहा - मंत्रिवर, यह व्यापारी पहली बार आया था उस दिन तुझसे एक सवाल किया था, उसका उत्तर तुमने अब तक नहीं दिया। आज दूसरा सवाल फिर खड़ा हो गया है, मेरे मन में। इसे दोबारा देखा तो इतना परिवर्तन कैसे हो गया?

मंत्री ने उत्तर देते हुए कहा - महाराज! दोनों ही प्रश्नों का उत्तर आज दे रहा हूँ। यह पहले आया था तब आपकी मृत्यु सोच रहा था। अब यह आपके जीवन की कामना करता है। इसीलिए आपके मन में इसके प्रति दो विभिन्न प्रकार की भावनाओं ने जन्म लिया है। जैसी अपनी भावना होती है, वैसा ही प्रतिबिम्ब दूसरे के मन पर भी पड़ने लगता है।

स्वस्थ संघीय दृष्टि का विकास

- युवाचार्य पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म.

भगवान ऋषभदेव के पारणे में जैन इतिहास में अक्षय तृतीया अमर हो गई। उसी तरह स्थानकवासी जैन परंपरा के इतिहास में श्रमण संघ के गठन से अक्षय तृतीया अमर हो गई। अलग-अलग टुकड़ों में विभक्त तथा द्वेष-ईर्ष्या को आग में जलते संघ समाज को संगठन का अद्‌भुत उपहार हमारे उन महापुरुषों ने दिया। इस श्रमण संघ के निर्माण में विभिन्न सम्प्रदायों की क्षेत्रों को विचारों की दूरी कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका तैयार हुई।

श्रमण संघ की उज्जवल परम्परा है आचार्यों के तेजोमय व्यक्तित्व की। श्रमण संघ की आधारशिला है, विभिन्न सम्प्रदायों के वे महापुरुष, जिन्होंने संकीर्णताओं के दुष्परिणाम से समाज को बचाया अपनी साधना, ऊर्जा, सामर्थ्य का आलंबन आधार देकर विशाल संघ का निर्माण किया। आज से 63 वर्ष पूर्व सादडी (राजस्थान) में इस संगठन, एकता को गंगोत्री का श्रीगणेश हुआ।

विगत 63 वर्षों में विज्ञान-तंत्र ज्ञान की प्रगति ने नये-2 शिखर पार किये। भौतिक साधनों ने व्यक्ति की जीवन शैली-विचारधारा तथा नजरिये में बहुत तेजी में बदलाव लाया। इसका प्रभाव हमारी धर्म संस्थाओं में भी भरपूर हुआ। श्रमण संघ जो कि समन्वय समादर सहयोग की त्रिवेणी में चला, उसमें भी इसके परिणाम दृष्टिगोचर हुये। साधना के स्थान पर साधनों का प्रभाव अधिक होने लगा। जनतांत्रिक रवैये का गैरफायदा लेने का कुछ तत्वों के लिये श्रमण संघ एक माध्यम सा बन गया। अपने-अपने सम्प्रदायों की आचार संहिता का पालन, अपने श्रावकों की बात को मानना, अपने क्षेत्रों को विस्तारित करना इसमें साम्प्रदायिक सामर्थ्य बढ़ता गया। दूसरी तरफ संघ के नाम पर अपनी मनमानी का समर्थन करना किसी भी वरिष्ठ अथवा सहयोगी के सही परामर्श को अनदेखा करना श्रावकों का उपयोग मात्र अपनी सुविधाओं को जुटाने के लिये करना तथा क्षेत्रीय स्थितियों को समझें बिना ही संत-सही वर्ग द्वारा अनुचित व्यवहार और बात करना इत्यादि कारणों से श्रमण संघ की साख को ठेस पहुँची।

आज के मुखर मीडिया ने समाज के समक्ष सारी स्थितियाँ बतलानी शुरू कर दी है। आज की आधुनिक साधना ने व्यक्ति को सत्य-असत्य को समझने, जानने की अनेकों विधाएं सुविधाएं प्रदान की है। हमारे गौरवशाली इतिहास को लक्ष्य में रख यदि विवेकशील वर्तमान को हम जीएं तो निश्चित ही भविष्य उज्जवल होगा। श्रमण संघ का यह विशेष है कि यह श्रमण संघ के प्रत्येक ईकाई के अस्तित्व को स्वीकार करना है, सम्मान करना है। श्रमण संघ के संत-सती श्रावक-श्राविका गुणग्रहण का भाव तथा उदार दृष्टिकोण रखते हैं। किसी भी गच्छ पंथ, सम्प्रदाय विशेष के व्यामोह से ऊपर रहते हैं। हाँ, अपने उपकारी गुरुओं की उपेक्षा, तिरस्कार वे कदापि स्वीकार नहीं करते हैं। हमारे संघ की इन विशेषताओं का हमें गंभीरता से आकलन एवं अनुकरण करना होगा।

हमारा गुणग्राहक संघ हमारी हर छोटी, बड़ी विशेषताओं का सम्मान करता है। हमारा तप, ज्ञान, साधना, प्रवचन, भजन, विचरण आदि अनेक बातों में से एक या एक से ज्यादा खासियत किसी में है तो संघ उसे आदर देता है। हम उसकी इस गुणग्राहकता को जो हमारे गुरुओं से प्राप्त है, उसे अपने अहंपोषण के लिये उपयोग करने लगते हैं। संघ से प्राप्त सम्मान को यदि हम हजम नहीं कर पाये तो दर्प बढ़ने लगता है, नम्रता नष्ट हो जाती है। बड़ा अपने को महान तथा छोटा अपने आप को बड़ा मानने लगता है। यह अहंकार संघ समाज के समन्वय के लिए खतरा बन जाता है। थोड़े से गुण का अहंकार संघ के लिये अभिशाप का रूप ले लेता है, एकता के लिये आघात बन जाता है।

उदारतावादी संघ किसी को मेरा-तेरा नहीं करता, वो सभी को अपना मानता है। सभी को सहयोग तथा सभी की सेवा का मंत्र अपने जीवन का सूत्र बनाता है। इस उदारता का गलत उपयोग कई सम्प्रदायवादी तथा कई सुविधावादी करते हैं। सम्प्रदायवादी ऐसे उदारतावादी संघ सदस्यों को अपने सम्प्रदाय की महिमा का बखान करके उन्हें संकीर्णताओं के दायरे में बांधते हैं। इसके सैंकड़ों उदाहरण दक्षिण से लेकर महाराष्ट्र तक में देखे जाते हैं। कई सुविधावादी संघ सदस्यों की उदारता का दुरुपयोग अपनी स्वार्थपूर्ति में करते देखे जाते हैं। धन-उपकरण-वाहन से लेकर अनेक प्रकार की अनुचित मांग करके संघ सदस्यों की भावनाओं को दोहन करते दिखाई देते हैं। इस तरह की आपूर्ति संयम को नुकसान पहुँचाती है और इंकार कटुता निर्माण करती है। उदारतावादी नजरिये को सही अर्थों में लेना जरूरी है।

हमारे सम्पूर्ण देशभर के अनेक महान चरित्रात्माओं ने दशकों को अपनी साधना, अपने आशीषों से जन-जन को सींचा है। चतुर्विध संघ को उन महापुरुषों के प्रति एक विशेष आस्था का निर्माण होता है। क्षेत्र विशेष स्थायी प्रभाव जन-मानस में होता है। हम उन उपकारों से सिंचित क्षेत्र में उस महापुरुष की सत्ता का, प्रभाव का यदि सम्मान करें, रखें तो हमारे संघ में श्रद्धा-आस्था का संरक्षण अधिक सुगम सरल होगा।

पानी की एक्सपायरी डेट क्या है?

प्रस्तुति - साहित्य दिवाकर डॉ. श्री सुरेन्द्रमुनि जी म.

अक्सर हम पानी की 'एक्सपायरी डेट' अपनी सुविधा और सोच के हिसाब से तय कर लेते हैं, जिसका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। जरा इस विरोधाभास पर विचार कीजिए। शहरों में जहाँ नल का पानी रोज आता है, वहाँ कल का पानी 'बासी' मानकर बहा दिया जाता है। (एक्सपायरी डेट : 1 दिन), जहाँ पानी दो या आठ दिन में आता है, वहाँ वही पानी दो या आठ दिनों तक बिल्कुल ताजा और पीने योग्य रहता है। शादी-समारोहों में जैसे ही हाथ में बिसलरी की नई बोतल आती है, पुरानी आधी भरी बोतल को तुरंत 'बेकार' समझकर फेंक दिया जाता है।

दूसरी तरफ की सच्चाई : रेगिस्तान में यात्रा करते समय पानी की एक-एक बूंद तब तक अमृत और ताजी रहती है, जब तक कि अगला जलस्रोत न मिल जाए। प्रकृति में, बांधों और तालाबों का पानी अगले मानसून तक (और सूखे की स्थिति में 2-3 साल तक) पूरी तरह उपयोगी रहता है। बोरवेल में 50 से 500 फीट नीचे से जो पानी हम निकालते हैं, वह जमीन के अंदर सैकड़ों-हजारों साल पुराना होता है, फिर भी वह सेहत के लिए सबसे सुरक्षित और शुद्ध होता है।

कुल मिलाकर, पानी की कोई एक्सपायरी डेट नहीं होती। पानी की एक्सपायरी केवल हमारी सोच और उसकी उपलब्धता के आधार पर तय होती है। जब पानी आसानी से मिलता है, तो हम उसे बासी कह देते हैं, जब किल्लत होती है, तो वही पानी अनमोल हो जाता है। अतः पानी का उपयोग विवेकशीलता, जिम्मेदारी और संयम से करें। अन्यथा, पानी खत्म होने से पहले हमारी यह लापरवाह सोच ही हमें प्यासा मार डालेगी।

एक विनम्र अनुरोध : यह केवल एक संदेश नहीं, बल्कि आने वाले कल को बचाने की एक पुकार है। कृपया इसे पढ़कर जागरूकता फैलाएं। जल ही जीवन है, जल है तो कल है! स्वस्थ रहें, सुरक्षित रहें और पानी बचाएं।

J. P. Jain Foundation

(स्व. श्री जय प्रकाश जैन की पुण्य स्मृति में स्थापित)

सेवा, करुणा और अहिंसा के मूल्यों को आत्मसात करते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति तक सहयोग पहुँचाने के उद्देश्य से निम्न जनकल्याणकारी सेवा-कार्यों का सतत् संचालन

चेयरमैन अभय जैन | महामंत्री अतुल जैन | कोषाध्यक्ष अमित जैन

- जैन हेल्थकेयर सेंटर के माध्यम से निःस्वार्थ एवं समर्पित स्वास्थ्य सेवाएं।
- भिवानी में फूड वैन द्वारा जरूरतमंदों को नियमित भोजन वितरण।
- दर्द निवारक - महाउपयोगी नाकोडा भैरव लाल तेल का देश भर में निःशुल्क वितरण।
- निर्धन विधवाओं एवं असहाय वर्गों को राशन सहायता।
- जीव-दया के संरक्षण एवं करुणा आधारित सेवा अभियान।
- साधर्मी बंधुओं को हर प्रकार की सहायता।

MATUSHRI BHAWAN, 537/5, Doodh Wali Gali, Mehrauli, New Delhi-110030 9717524774 Email.: foundationjpjain@gmail.com

प्रमाद से प्रमोद
सजग जीवन की साधना

पुस्तक से साभार
लेखक-गुरुभक्त अतुल जैन

(गतांक से आगे)

अध्याय 20

छाती की जकड़न - नियंत्रण का केंद्र
(गहन विस्तार)

जब हम कहते हैं कि "मन में तनाव है", तो उसका वास्तविक अनुभव अक्सर छाती में होता है। छाती केवल एक शारीरिक क्षेत्र नहीं है। यह भावनाओं, नियंत्रण, कर्ताभाव और आत्म-छवि का प्रमुख केंद्र है। प्रमाद जब गहराता है, तो उसका पहला स्पष्ट शारीरिक संकेत अक्सर छाती की जकड़न के रूप में प्रकट होता है।

1. छाती - भावनात्मक क्षेत्र : छाती का क्षेत्र हृदय, फेफड़ों और श्वास से जुड़ा है। यही क्षेत्र प्रेम, आहत होना, गर्व, अपमान और नियंत्रण की भावना से गहराई से जुड़ा हुआ है। जब कोई कहता है-"दिल भारी है" या "छाती पर बोझ है" तो यह केवल भाषा नहीं, अनुभव है।

2. नियंत्रण और छाती का संबंध : जब व्यक्ति सोचता है-"मुझे संभालना है।" "मुझे मजबूत रहना है।" "मुझे टूटना नहीं है।" तो वह अनजाने में छाती को कस लेता है। यह कसाव नियंत्रण का संकेत है। छाती सख्त हो जाती है जैसे भीतर एक दीवार खड़ी हो गई हो।

3. आहत अहंकार : जब किसी की बात हमारी पहचान को छूती है, तो छाती में हल्का झटका अनुभव होता है। यह आहत अहंकार का शारीरिक संकेत है। यदि इसे तुरंत न देखा जाए, तो यह कठोरता में बदल सकता है। धीरे-धीरे व्यक्ति संवेदनशील कम और रक्षात्मक अधिक हो जाता है।

4. श्वास और छाती : उथली श्वास अक्सर छाती तक ही सीमित रहती है। जब व्यक्ति तनाव में होता है, तो श्वास पेट तक नहीं जाती। छाती ऊपर-ऊपर उठती-गिरती रहती है। यह संकेत है कि भीतर असुरक्षा है और शरीर सतर्क अवस्था में है।

5. छाती का दीर्घकालीन तनाव : यदि छाती की जकड़न लंबे समय तक बनी रहे, तो यह शरीर पर प्रभाव डाल सकती है। थकान, सूक्ष्म, सूजन, श्वास की कमी, असहजता, परंतु इन लक्षणों की जड़ अक्सर भावनात्मक होती है।

6. ''मजबूत'' बनने का भ्रम : समाज हमें सिखाता है-कमजोरी मत दिखाओ। आँसू मत बहाओ। टूटो मत। धीरे-धीरे व्यक्ति अपने भावों को दबाता है। छाती कठोर होती जाती है। वह बाहर से मजबूत दिखता है, पर भीतर तनाव जमा होता जाता है।

7. छाती को नरम करना : छाती की जकड़न का उपचार बल से नहीं, नरमी से होता है। गहरी श्वास लें। श्वास को धीरे-धीरे पेट तक जाने दें। अनुभव को बिना दमन के स्वीकार करें। यदि आहत हैं, तो उसे मान लें। यदि थके हैं, तो उसे स्वीकार करें। स्वीकृति छाती को ढीला करती है।

8. नियंत्रण छोड़ने का अभ्यास : अपने आप से कहें-"मुझे सब नियंत्रित नहीं करना है।" "मैं सब संभालने वाला अकेला नहीं हूँ।" "जीवन मेरे नियंत्रण से बड़ा है।" इन वाक्यों के साथ गहरी श्वास लें। धीरे-धीरे छाती का दबाव कम होने लगता है।

9. साक्षी का स्पर्श : जब छाती में जकड़न हो, तो तुरंत उसे बदलने की कोशिश न करें। पहले उसे देखें। ध्यान दें-कहाँ कसाव है? श्वास कहाँ रुक रही है? क्या कोई भाव दबा हुआ है? यह साक्षी भाव छाती की दीवार को पिघलाना शुरू कर देता है।

10. अंतिम स्पष्टता : छाती की जकड़न केवल शारीरिक लक्षण नहीं है। वह नियंत्रण, कर्ताभाव और आहत पहचान का संकेत है। जब सजगता छाती तक पहुँचती है और श्वास उसे नरम करती है, तो ऊर्जा पुनः प्रवाहित होने लगती है। अगले अध्याय में हम समझेंगे-नाभि का तनाव अस्तित्व-भय से कैसे जुड़ा है।

❀❀❀

(क्रमशः)

जैन दर्शन के विदेशी विद्वान श्रृंखला

पाश्चात्य जगत में जैन दर्शन की स्वतंत्र पहचान स्थापित करने वाले विद्वान : हरमन जैकोबी

- प्रोफेसर डॉ. आंचल जैन

भारतीय दर्शन की प्राचीन परंपराओं में जैन धर्म एक ऐसी वैचारिक धारा है, जिसने मानवता को अहिंसा, अनेकांतवाद, अपरिग्रह और आत्मानुशासन जैसे सार्वभौमिक सिद्धांत प्रदान किए। किंतु आधुनिक युग के प्रारंभिक पाश्चात्य अध्ययनों में जैन धर्म को प्रायः बौद्ध धर्म की एक शाखा मान लिया जाता था। ऐसे समय में जर्मन विद्वान हरमन जैकोबी ने अपने गंभीर शोध, भाषिक दक्षता और ऐतिहासिक विश्लेषण के आधार पर यह सिद्ध किया कि जैन धर्म एक स्वतंत्र, प्राचीन और अत्यंत विकसित दार्शनिक परंपरा है।

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा : हरमन जैकोबी का जन्म 11 फरवरी 1850 को जर्मनी में हुआ था। प्रारंभ से ही उनकी रुचि भाषाओं, इतिहास और प्राचीन सभ्यताओं के अध्ययन में थी। उन्होंने यूरोप में उस समय विकसित हो रही प्राच्यविद्या की परंपरा के अंतर्गत संस्कृत, प्राकृत और भारतीय दर्शन का गहन अध्ययन किया। बाद में वे जर्मनी के प्रतिष्ठित University of Bonn में संस्कृत एवं प्राकृत भाषा के प्राध्यापक बने।

भारतीय संस्कृति और जैन साहित्य के प्रति उनकी जिज्ञासा उन्हें भारत तक ले आई। 1873-74 के दौरान उन्होंने भारत की यात्रा की, जहाँ उन्होंने अनेक प्राचीन जैन हस्तलिपियों, पुस्तक भंडारों और विद्वानों से संपर्क स्थापित कर अध्ययन किया। भारत में रहते हुए उन्होंने यह अनुभव किया कि जैन धर्म केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक जीवन का एक गहरा और जीवंत अंग है।

जैन धर्म की स्वतंत्र पहचान का प्रतिपादन : उन्नीसवीं शताब्दी में अनेक यूरोपीय विद्वान जैन धर्म को बौद्ध परंपरा का उपविभाग मानते थे। किन्तु जैकोबी ने जैन आगमों और प्राचीन ग्रंथों का तुलनात्मक अध्ययन कर यह प्रमाणित किया कि जैन धर्म की अपनी स्वतंत्र दार्शनिक संरचना, साधना-पद्धति और ऐतिहासिक परंपरा है। उन्होंने यह भी प्रतिपादित किया कि जैन परंपरा की जड़ें अत्यंत प्राचीन हैं और उसका विकास स्वतंत्र रूप से हुआ है।

उनके निष्कर्षों ने पाश्चात्य अकादमिक जगत की पूर्व धारणाओं को चुनौती दी और जैन दर्शन को एक स्वतंत्र बौद्धिक परंपरा के रूप में स्थापित किया। यही कारण है कि आधुनिक जैन अध्ययन के इतिहास में उनका नाम अत्यंत सम्मानपूर्वक लिया जाता है।

जैन आगमों को विश्व तक पहुँचाने का कार्य : हरमन जैकोबी ने जैन धर्म के मूल ग्रंथों के अध्ययन और अनुवाद में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने आचारनंग सूत्र और कल्पसूत्र जैसे महत्त्वपूर्ण जैन आगमों का अंग्रेजी अनुवाद किया, जिन्हें बाद में Sacred Books of the East श्रृंखला में प्रकाशित किया गया।

इन अनुवादों ने पश्चिमी जगत को पहली बार व्यवस्थित रूप से जैन दर्शन, महावीर स्वामी के जीवन, जैन साधना और आचार परंपरा से परिचित कराया। यह केवल भाषांतरण नहीं था, बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा को वैश्विक बौद्धिक विमर्श का हिस्सा बनाने का एक ऐतिहासिक प्रयास था।

जैन संस्कृति और भारतीय सभ्यता का अंतर्संबंध : जैकोबी का दृष्टिकोण केवल धार्मिक अध्ययन तक सीमित नहीं था। उन्होंने जैन धर्म को भारतीय संस्कृति की व्यापक धारा के भीतर समझने का प्रयास किया। उनके अनुसार जैन चिंतन ने भारतीय समाज में नैतिकता, सहिष्णुता, व्यापारिक ईमानदारी, साहित्यिक परंपरा और भाषिक विकास को गहराई से प्रभावित किया।

विशेष रूप से अहिंसा और संयम के सिद्धांतों को उन्होंने भारतीय सांस्कृतिक चेतना की अमूल्य धरोहर माना। उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि जैन समुदाय ने भारतीय साहित्य, कला और ज्ञान संरक्षण की परंपरा में अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

प्राकृत भाषा और जैन साहित्य पर कार्य : जैन साहित्य की मूल भाषा प्राकृत के क्षेत्र में भी उनका योगदान अत्यंत उल्लेखनीय है। उन्होंने प्राकृत व्याकरण, शब्द संरचना और साहित्यिक अभिव्यक्ति पर गंभीर अनुसंधान किया। उनके कार्यों ने आगे आने वाले शोधकर्ताओं के लिए एक मजबूत अकादमिक आधार तैयार किया। आज भी जैन आगम और प्राकृत अध्ययन के क्षेत्र में उनके शोध संदर्भग्रंथों के रूप में उपयोग किए जाते हैं।

भारतीय विद्वानों से आत्मीय संबंध : हरमन जैकोबी केवल पुस्तकालयों तक सीमित रहने वाले विद्वान नहीं थे। उन्होंने भारतीय संतों, मुनियों और विद्वानों के साथ संवाद स्थापित कर भारतीय चिंतन को उसके जीवंत स्वरूप में समझने का प्रयास किया। वे भारतीय राष्ट्रवादी चिंतक बाल गंगाधर तिलक के समकालीन थे और वैचारिक रूप से उनसे प्रभावित भी थे।

जैन विद्वानों और संतों के प्रति उनके मन में गहरा सम्मान था। उनके अनुसंधानों ने आगे चलकर वीरचंद राघव जी गांधी जैसे भारतीय प्रतिनिधियों को विश्व मंच पर जैन धर्म की प्रभावशाली प्रस्तुति के लिए बौद्धिक आधार प्रदान किया।

19 अक्टूबर 1937 को हरमन जैकोबी का निधन हुआ, किन्तु उनका शोधकार्य आज भी जीवित है। उन्होंने अपने निष्पक्ष अध्ययन और अकादमिक निष्ठा से यह सिद्ध किया कि जैन धर्म भारतीय संस्कृति की एक प्राचीन, स्वतंत्र और वैज्ञानिक चिंतनधारा है। हरमन जैकोबी उन विदेशी विद्वानों में अग्रणी हैं, जिन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा और जैन दर्शन को वैश्विक बौद्धिक मंच पर सम्मानजनक स्थान दिलाने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई। उनका जीवन और कृतित्व आज भी जैन अध्ययन तथा भारतीय संस्कृति के शोधकर्ताओं के लिए प्रेरणास्रोत बना हुआ है।

परिवार, व्यवसाय और समाज के बीच संतुलन है अच्छे समाजसेवी का लक्षण

- मोनिका सुरेशचंद जैन

परिवार और व्यवसाय की उपेक्षा करके की जाने वाली सामाजिक सेवा दीर्घकाल में व्यक्ति, परिवार और स्वयं समाज-तीनों के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकती है। जो व्यक्ति समाज को दिशा देना चाहता है, यदि उसका अपना परिवार असुरक्षित, उपेक्षित या आर्थिक संकट से ग्रस्त हो जाए, तो उसकी सेवा भी अंततः तनाव, कटुता और असंतुलन का कारण बन सकती है। भारतीय चिंतन में गृहस्थ आश्रम को केवल निजी जीवन नहीं, बल्कि समाज की आधारशिला माना गया है। परिवार ही संस्कार देता है, व्यवसाय ही आर्थिक स्थिरता देता है और इन्हीं के संतुलन पर सेवा का भवन खड़ा होता है।

यदि कोई व्यक्ति परिवार को समय न दे, बच्चों के विकास की उपेक्षा करे, माता-पिता की जिम्मेदारी भूल जाए या व्यवसाय को संकट में डाल दे, तो सामाजिक सेवा धीरे-धीरे "त्याग" से अधिक "असंतुलन" का रूप ले सकती है। अनेक बार देखा गया है कि कुछ लोग समाज में अत्यधिक सक्रिय रहते हैं, लेकिन उनके अपने घर में संवादहीनता, आर्थिक तनाव और भावनात्मक दूरी बढ़ने लगती है। ऐसी स्थिति में अगली पीढ़ी सामाजिक कार्य को प्रेरणा नहीं, बल्कि पीड़ा के रूप में देखने लगती है।

सेवा का आदर्श वही है जिसमें परिवार सुरक्षित रहे, व्यवसाय या आजीविका स्थिर रहे और समाज के प्रति दायित्व भी निभे। सनातन दृष्टि "समन्वय" की बात करती है, पलायन की नहीं। जो अपने परिवार, व्यवसाय और समाज-तीनों के बीच संतुलन स्थापित कर लेता है, वही दीर्घकाल तक प्रभावी और प्रेरणादायी सामाजिक कार्य कर सकता है।

श्रमण संघीय जैन पर्व

दिनांक 3 जून : श्री कांशीराम जी म. - स्मृति दिवस
दिनांक 12 जून : स्वामी श्री रूपचंद जी म. - स्मृति दिवस
दिनांक 13 जून : सलाहकार श्री सहजमुनि जी म. - स्मृति दिवस

लौकिक एवं राष्ट्रीय पर्व

दिनांक 1 जून : बाल सुरक्षा दिवस
दिनांक 5 जून : विश्व पर्यावरण दिवस

दृष्टि बदलो, सृष्टि स्वयं बदल जाएगी

- प्रमुख मंत्री श्री शिरीषमुनि जी म.

आत्म ज्ञान व आत्म-ध्यान में रमण करता हुआ चतुर्विध संघ आत्म कल्याण की ओर आगे बढ़ रहा है। चारो तीर्थों में प्रत्येक तीर्थ तिरने के लिए आतुर है। प्रत्येक तीर्थ तिरना चाहता है, किन्तु तिरने की बजाय पंचम आरे का तीर्थवासी और कर्मों से भारी क्यों होता जा रहा है कारण क्या है?

एक साधक ने आचार्य भगवंत से प्रश्न किया हमें दूसरों में दोष क्यों नजर आते हैं व अपने दोष क्यों नहीं नजर आते इसका कारण क्या है? आचार्य भगवन ने फरमाया-दृष्टि का दोष है। जो साधक मिथ्यात्व व मोह से ग्रसित है उसमें उसका बाधक तत्त्व 'मैं' है। वह अपने को भी अहंकारवश देह मानता है और सामने वाले को भी देह मानकर मेरा मानता है, उसे भी देह मानता है, उसी आधार पर उसमें गुण दोष देखता है व उन्हें सुधारकर वो समझता है मैं उन्हें ठीक कर अपने घर समाज व दुनिया को ठीक कर दूंगा। मैं और मेरे से संसार को ग्रसित कर रखा है।

जो साधक इस रोग से पीड़ित है। वे सब अध्यात्म की भाषा में अविद्या या मिथ्या दृष्टि कहलाते हैं। इसका उपाय क्या है? समाधान है - दृष्टि बदलो, सृष्टि बदलो। सद्गुरु की कृपा होती है, तब साधक की दृष्टि बदलती है अर्थात् साधक को शरीर भिन्न व आत्मा भिन्न की दृष्टि प्राप्त होती है। उसे सद्गुरु बोध करवाते हैं तुम शरीर नहीं आत्मा हो। शरीर में रहते हो पर तुम भिन्न हो। तुम कौन हो? इसके लिए सद्गुरु उसे तत्त्व का बोध करवाते हैं। तत्त्व मूल में दो है विस्तार से सात एवं नौ है।

दो तत्त्व-जीव और अजीव, सात तत्त्व-जीव-अजीव, आस्रव बंध, संवर, निर्जरा व मोक्ष। नौ तत्त्व-जीव, अजीव, पुण्य व पाप, आस्रव, संवर, निर्जरा बन्ध व मोक्ष। संख्या में भले ही भेद है पर मूल में कोई अंतर नहीं है। तत्वार्थ सूत्र में मोक्ष के तीन रत्न बताये हैं। "सम्यक् दर्शन, ज्ञान, चारित्रणी मोक्ष मार्गः" सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चारित्र मोक्ष मार्ग है। जीव को मुक्त होने के लिए प्रथम रत्न सम्यक् दर्शन की आवश्यकता है। सूत्रकार बताया है 'तत्वार्थ श्रद्धानां सम्यक् दर्शनं' तत्व पर श्रद्धान् करना ही सम्यक् दर्शन है। मूल में तत्व दो है - जीव और अजीव। साधक के पास वो दृष्टि हो, जिससे उसे जो तत्व जैसा है वह उसे वैसा ही दिखे, दिखने का अर्थ यहाँ अनुभव में आना है।

सम्यक् अर्थात् सत्य के दर्शन करें। सम्यक्त्व आत्मा जो तत्व जैसा है, वह उसे वैसा ही जानता है, देखता है, उसे सम्यक् दृष्टि कहते हैं। संसार में दो तरह के जीव यात्री है - स्थावर व त्रस। जिसको दृष्टि प्राप्त होती है वह जीव भेद-विज्ञान को प्राप्त कर लेता है वह भेद की जगह भेद करता है अर्थात् देह में भेद कर जीव को अलग देखता है व जीव शरीर को अलग देखता है। अपने को केवल देह जो मानता है, वह सबको भी देह मानता है और सबको देह के आधार पर अपना, पराया मानता है। उसकी दृष्टि पुद्गल पर रहती है, वह पुद्गल के आधार पर उसका मूल्यांकन करता है वह मिथ्या दृष्टि है। सम्यक्त्वी अर्थात् सम्यक् दृष्टि जीव सब तरफ लोक में ठसा-ठस भरे हुए जीव के दर्शन करता है, वह देह को जीव के रहने का स्थान मात्र मानता है, उसके लिए देह गौण है, जीव मुख्य है। उसे हम सम्यक् दृष्टि कहते हैं।

ये दृष्टि जीवन में सद्गुरु के आने पर प्राप्त होती हैं वह अभेद दृष्टि से सबमें जीव के दर्शन करता है अपने में भी जीव के दर्शन करता है अहंकार वाले में, मेरे का विसर्जन कर भेद-विज्ञान से अपने में जीव के दर्शन करता है व प्रत्येक की देह को गौण करता है व उनमें भी जीव के दर्शन करता है वह उनके देह की वृत्तियों को महत्त्व नहीं देता।

श्रमण संघ को ऐसे आत्मज्ञानी सद्गुरु मिले हैं। हम सभी तीर्थवासी उनके दिशा निर्देश में दृष्टि बदलो सृष्टि बदलो सूत्र के आधार पर कर्म दृष्टि से आत्म दृष्टि वाले बने। आत्म दृष्टि वाले सबमें आत्मा के दर्शन करता है व स्वयं को भी आत्मा मानकर, कर्म क्षय करता है। उसका ध्यान स्वभाव पर रहता हैं कर्म दृष्टि वाले क्रिया पर ध्यान देते हैं, क्रिया के आधार पर विभाव में चले जाते हैं।

अतः मुक्ति व कर्म बन्ध दृष्टि से होते हैं। जीव कर्म दृष्टि से आत्म दृष्टि वाला बने। आत्म दृष्टि से जीव स्वभाव व विभाव के आधार पर कर्म क्षय व बंध करते हैं। चतुर्विध संघ में प्रत्येक साधक आत्म दृष्टि को मुख्यता देकर "तिन्नाणं तारयाणं" स्वयं तिरे और दूसरों को तिराने में निमित्त बने।

काव्य श्रृंखला...

चलो साथियों जैन उपाश्रय

- डॉ. दिलीप धींग

चलो साथियों जैन उपाश्रय, पता चला महाराज आए हैं।
वीर प्रभु के क्षमा-धर्म का, संजीवन सन्देश लाए हैं।।
सोनू मोनू चिण्टू पिण्टू, मुनिया गुड़िया भैया बहना।
पास-पड़ोसी मम्मी-पापा, साथ सभी को लेकर जाना।
बड़ी दूर से पैदल चलकर, ज्ञान-पोटली लाए हैं।
चलो साथियों जैन उपाश्रय, पता चला महाराज आए हैं।।
जीवों के रक्षक रखवाले, फक्कड़ निर्भय सन्त निराले।
आज यहाँ कल वहाँ विचरते, आओ! उनके दर्शन पा लें।
उनके संयममय जीवन के, चलो साथियों जैन उपाश्रय,
पता चला महाराज आए हैं।।
दया पालिये सबको कहते। सहज लाभ धर्म का देते।
अपरिग्रह के मूर्तिमान वे, समभावों से संकट सहते।
उनके मंगल-वचन श्रवण कर, जीवन के गम विसराए हैं।
चलो साथियों जैन उपाश्रय, पता चला महाराज आए हैं।।
ज्ञान-ध्यान की सतत साधना, स्व-पर के उपकार में।
किसी तरह का भेद नहीं है, सन्तों के दरबार में।
समता का रस देने वाले, समता के साधक आए हैं।
चलो साथियों जैन उपाश्रय, पता चला महाराज आए हैं।।
कुछ दीवारों और मीनारों, को कुछ जन आश्चर्य बताते।
लेकिन जैन मुनि इस जग में, सचमुच ही आश्चर्य कहाते।
प्राप्त भोगों, सुख-सुविधाओं, सबको पीठ दिखाए हैं।
चलो साथियों जैन उपाश्रय, पता चला महाराज आए हैं।।
सूने मन में वसन्त लाते। इसीलिए ये सन्त कहाते।
पाँच व्रतों की महिमा वाला, पचरंगी झण्डा फहराते।
ठण्डे जल से भरे कलश ये, चलो साथियों जैन उपाश्रय,
पता चला महाराज आए हैं।

ब्रिटिश जैन सांसद बैरोनेस शमा शाह ने समनसुत्तम् पर हाथ रख कर ली पद की शपथ : वैश्विक जैन गौरव का ऐतिहासिक क्षण!

ब्रिटेन की हॉउस ऑफ लॉर्ड्स में सदस्यता प्राप्त करनेवाली प्रथम जैन प्रतिनिधि बैरोनेस शमा शाह द्वारा समनसुत्तम् पर शपथ ग्रहण करना विश्व जैन समाज के लिए अत्यंत गौरवपूर्ण और ऐतिहासिक घटना है। यह केवल एक संवैधानिक औपचारिकता नहीं थी, बल्कि जैन धर्म के सार्वभौमिक मूल्यों-अहिंसा, अनेकांत, करुणा और सह-अस्तित्व-की वैश्विक प्रतिष्ठा का प्रतीकात्मक उद्घोष भी था। उनके इस निर्णय ने जैन समाज की सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विरासत को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर नई पहचान प्रदान की।

समनसुत्तम् जैन आगमिक परंपरा के मूल सिद्धांतों का एक समन्वित संकलन है, जिसे विभिन्न जैन सम्प्रदायों के आचार्यों एवं विद्वानों के सहयोग से तैयार किया गया था। प्राचीन आगमों और जैन शास्त्रों के सारतत्त्व को समाहित करनेवाले इस ग्रंथ को शपथ के आधार के रूप में स्वीकार कर बैरोनेस शमा शाह ने न केवल इसकी सार्वभौमिक मान्यता को सुदृढ़ किया, बल्कि यह भी सिद्ध किया कि जैन धर्म की शाश्वत शिक्षाएँ आज के लोकतांत्रिक और वैश्विक समाज में भी समान रूप से प्रासंगिक हैं। उनका यह कदम आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा और जैन एकता का एक सशक्त प्रतीक बन गया है।

- जैन प्रकाश सम्पादकीय टीम...

श्री सुभाष ओसवाल जैन श्रमण संघीय अमृत महोत्सव राष्ट्रीय आयोजन समिति के अध्यक्ष मनोनीत

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जैन द्वारा श्रमण संघ स्थापना के अमृत महोत्सव वर्ष के राष्ट्रव्यापी आयोजनों को सुव्यवस्थित एवं प्रभावशाली रूप से संपन्न कराने हेतु जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय पर्यवेक्षक परम आदरणीय श्री सुभाष ओसवाल जैन को "श्रमण संघीय अमृत महोत्सव राष्ट्रीय आयोजन समिति" का अध्यक्षीय दायित्व प्रदान किया गया।

ज्ञातव्य है कि श्री सुभाष ओसवाल जैन विगत लगभग 60 वर्षों से समाज एवं संगठन की सेवा में सक्रिय रहते हुए विभिन्न दायित्वों का अत्यंत निष्ठा, अनुशासन एवं कुशल नेतृत्व के साथ निर्वहन करते आ रहे हैं।

हार्दिक प्रसन्नता है कि उनके अनुभवी मार्गदर्शन एवं संतुलित नेतृत्व में अमृत महोत्सव वर्ष के कार्यक्रम देशभर में अत्यंत गरिमामय एवं ऐतिहासिक स्वरूप में सम्पन्न होंगे। - जैन प्रकाश सम्पादकीय टीम

(पृष्ठ 1 का शेष 'सम्पादकीय')

स्थानकवासी जैन समाज के संदर्भ में यह विषय और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। अन्य अनेक जैन समुदायों में मंदिरों, मूर्तियों, प्रतिष्ठाओं एवं बोलियों की परम्परा के माध्यम से दान की प्रवृत्ति को विशेष रूप से प्रोत्साहित किया जाता है। वहाँ धार्मिक आयोजनों में भावनात्मक और सामाजिक रूप से लोगों को बड़े दान के लिए प्रेरित करने की परम्परा विकसित हो चुकी है। इसके विपरीत स्थानकवासी समाज में इस प्रकार की बाह्य प्रदर्शनात्मक व्यवस्थाएँ अपेक्षाकृत कम हैं। परिणामस्वरूप दानदाताओं की संख्या और दान का प्रवाह तुलनात्मक रूप से सीमित दिखाई देता है।

ऐसी स्थिति में स्थानकवासी समाज को और अधिक सजगता एवं योजनाबद्ध दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। दान को केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि संरचनात्मक दृष्टि से समाज के सभी क्षेत्रों-शिक्षा, साहित्य, युवाओं, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक सुरक्षा, धर्मरक्षा और सीमित एवं संतुलित जीवदया-में समुचित रूप से वितरित करना होगा। आज आवश्यकता केवल दान करने की नहीं, बल्कि दूरदर्शी दान करने की है। जीवदया आवश्यक है, परंतु शिक्षा, ज्ञान, सामाजिक सुरक्षा और भविष्य निर्माण भी उतने ही आवश्यक हैं। जैन समाज यदि अपनी दानशक्ति का संतुलित उपयोग करेगा, तभी वह आने वाली पीढ़ियों के लिए एक मजबूत, शिक्षित और आत्मनिर्भर समाज का निर्माण कर सकेगा।

M.J. Home Furnishing
Manufacturer of Bedsheet, Mink Blanket, Bright Velvet
Dohar, Polar Blanket, AC Quilt Fabric
Alipur Khalsa, Khotpura Road, Kohand, Karnal
Mob: 8053018933, 8727890101
E-mail: mjhome025@gmail.com
Vijay Jain
National Chairman - Jain Conference, New Delhi

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

आचार्यश्री जी के सान्निध्य में हुआ त्रिवेणी संगम कार्यक्रम

सूरत (गुजरात) : आत्मज्ञानी सद्गुरुदेव आचार्य सम्राट श्री शिवमुनि जी म. के सान्निध्य में एवं महासाध्वी श्री विजयलता जी म. के निर्देशन में मेवाड़ प्रवर्तक श्री अम्बालालजी म. का संयम शताब्दी वर्ष, राजस्थान सिंहनी श्री प्रेमवतीजी म. का जन्म शताब्दी वर्ष एवं जिन शासन गौरव ज्ञानसिंधु महामंत्री श्री सौभाग्यमुनि जी म. का संयम अमृत (हीरक) महोत्सव का आयोजन श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ चलथान के तत्वावधान में रविवार को लब्धि पार्श्वनाथ तीर्थ धाम के प्रांगण में हुआ। इस अवसर पर सूरत, दक्षिण गुजरात एवं भारतवर्ष में फैले गुरु भक्त श्रद्धालु श्रावक - श्राविकागण बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

इस अवसर पर आचार्य भगवन ने मेवाड़ प्रवास के दौरान श्रमण संघीय महामंत्री श्री सौभाग्यमुनि जी महाराज एवं प्रवर्तक श्री मदनमुनि जी महाराज के साथ बीते पलों को भी याद किया। मेवाड़ की भक्ति भावना, श्रद्धा की अनुमोदना की। 17 मई को आचार्य सम्राट ध्यान योगी युगप्रधान पू. श्री शिवमुनि जी म. का 55वाँ संयम प्रकाशोत्सव आत्म भवन के प्रांगरण में श्रद्धा, भक्ति, उत्साह, उल्लास एवं उमंग के साथ मनाया गया। इस अवसर पर सरस्वती विद्या केन्द्र पर आयोजित बाल संस्कार निर्माण शिविर के लगभग 70 बालक-बालिका एवं पूना, नासिक, अहिल्या नगर, उदयपुर, भीलवाड़ा, सूरत आदि जगहों से भी श्रद्धालु श्रावक उपस्थित थे। इस अवसर पर युवा मनीषी श्री शुभम मुनि जी म. ने बाल शिविरार्थियों को ध्यान की प्रेरणा प्रदान की। मधुर गायक श्री निशांत मुनि जी म. ने भजन की सुमधुर प्रस्तुति दी। शिविरार्थियों के अल्पाहार एवं दोपहर के भोजन की व्यवस्था शिवाचार्य आत्म - ध्यान फाउण्डेशन द्वारा संचालित भोजनशाला में थी।

'चरण-स्पर्श' अभियान के अन्तर्गत जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश द्वारा श्री जगदीश राय जैन का अभिनन्दन

नई दिल्ली : जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष श्री जितेन्द्र जैन के सक्षम नेतृत्व, कर्त्तव एवं अपनत्व से भरपूर क्रियाशैली के तदनन्तर वर्तमान में समाज के वरिष्ठतम् महानुभावों में से एक अति सम्मानित, गुरुदेव मुनि श्री रामकृष्ण जी म. द्वारा 'सरदार पटेल' की उपाधि से विभूषित पश्चिम विहार श्रीसंघ के पूर्व अध्यक्ष आदरणीय श्री जगदीश राय जैन का गुरुग्राम में उनके वर्तमान निवास स्थान पर भव्याभिनन्दन किया गया।

इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस के श्री जितेन्द्र जैन के अलावा श्री सुभाष ओसवाल जैन, श्री रामनिवास जैन, श्री राजेश कुमार जैन, श्री ज्ञानचन्द जैन, श्री सुरेन्द्र जैन, श्री ललित ओसवाल जैन, श्री रवि जैन, श्री दीपक जैन, श्री स्वदेश भूषण जैन आदि उपस्थित हुए। सम्मान प्राप्तकर्ता परिवार द्वारा रात्रि भोज की सुन्दर व्यवस्था के लिए उपस्थित महानुभावो ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

प्रेषक : ललित ओसवाल जैन

राष्ट्रसंत उत्तर भारतीय प्रवर्तक पूज्य श्री सुभद्र मुनि जी म. रोहिणी दिल्ली में विराजमान

राष्ट्रसंत उत्तर भारतीय प्रवर्तक पूज्य श्री सुभद्र मुनि जी महाराज, जगत वल्लभ श्री अमित मुनि जी महाराज आदि ठाणे-5 श्री वर्धमान जैन हॉस्पिटल संत निवास सेकंड फ्लोर नियर C-6 डी.डी.ए. मार्केट सेक्टर 15 रोहिणी दिल्ली में विराजमान है। गुरुदेवश्री जी अभी कुछ दिनों तक यहीं पर विराजमान रहेंगे।

प्रेषक : सतीश जैन

नासिक में चार दिवसीय बाल संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन

नासिक (महाराष्ट्र) : नासिक ध्यान केन्द्र में 15 से 18 मई तक बाल संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन हुआ। बाल संस्कार निर्माण शिविर में लगभग 70 बालक-बालिकाएं सहभागी रहे। 17 मई को आचार्य भगवन का 55वाँ दीक्षा दिवस था। दीक्षा दिवस पर शिविरार्थी आचार्य भगवन के दर्शन हेतु नासिक से बलेश्वर सूरत आए। आए हुए शिविरार्थियों को आत्म-ध्यान का प्रयोग करवाते हुए आचार्य भगवन ने अपने मंगल उद्बोधन फरमाया कि बच्चों में संस्कारों का निर्माण आवश्यक है। हम सभी इस जमीन के मानव है। बच्चों की जितनी उम्र है उतने ही मिनट आत्म ध्यान करना चाहिए। आत्मा है तो शरीर का महत्त्व है। सभी जीवों में अपने समान आत्मा को देखो। ध्यान में सबसे पहले अपने श्वांस को देखें आते-जाते श्वांस को देखेंगे तो धीरे-धीरे एकाग्रता का विकास होता है और ध्यान में भी यह सहायक है। आचार्य भगवन ने सभी को 30 मिनट का ध्यान करवाया। इससे पूर्व श्रमण संघीय प्रमुख मंत्री श्री शिरीष मुनि जी म., युवामनीषी श्री शुभममुनि जी म., प्रवचन प्रभाकर श्री शमितमुनि जी म., मधुर गायक श्री निशांत मुनि जी म., श्री शाश्वत मुनि जी म. ने भी अपने भाव-भजन एवं प्रवचनों के माध्यम से रखे।

नासिक एवं कुप्पकलां में आत्म-ध्यान धर्म यज्ञ का आयोजन

114 आत्मार्थी बने सहभागी

दिनांक 22 से 31 मई तक एक दिवसीय, चार दिवसीय एवं दस दिवसीय आत्म-ध्यान धर्म यज्ञ का आयोजन शिवाचार्य आत्म ध्यान फाउण्डेशन नासिक एवं कुप्पकलां में हुआ। नासिक ध्यान केन्द्र पर 69 एवं कुप्पकलां में 45 दोनों जगहों पर कुल 114 आत्मार्थी साधक सहभागी रहे। नासिक में साधिका सुनीता राहता एवं कुप्पकलां में श्री राजपाल जैन, श्री अजय जैन, डॉ. अमिता जैन आदि का प्रशिक्षण के रूप में विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। आचार्य भगवन एवं प्रमुख मंत्री श्री शिरीष मुनि जी म. के आशीर्वाद एवं वीतराग साधिका निशा के दिशा-निर्देशन में यह आत्म-ध्यान धर्म यज्ञ संचालित हुआ।

विचरण/चातुर्मास सूचनाएँ...

प्रवर्तक श्री सुकनमल जी म. सारण में

पाली (राजस्थान) : श्रमण संघीय प्रवर्तक पूज्य गुरुदेव श्री सुकनमल जी म., उप-प्रवर्तक पू. श्री अमृतमुनि जी म. आदि ठाणा 5 से महासती श्री पुष्पवती गौशाला, सारण, जिला पाली में विराजमान है। सारण ग्राम में दिनांक 29 मई को श्री मरुधर केसरी ओसवाल जैन भवन का उद्घाटन एवं गुरु जन्म दीक्षा नमन समारोह आयोजित किया गया। आगामी संभावित समारोह 16 जून मादलिया में श्री महावीर मरुधर केसरी गौशाला उद्घाटन तथा 22 जुलाई चातुर्मास प्रवेश - आचार्य श्री रघुनाथ स्मृति जैन भवन पाली में होगा।

पू. श्री मुकेश मुनि जी म. विहार करके कोतूर पहुँचे

हैदराबाद (तेलंगाना) : लोकमान्य सन्त, प्रवर्तक पू. गुरुदेव श्री रूपचन्द जी म.सा. के शिष्यरत्न युवा तपस्वी पूज्य श्री मुकेश मुनि जी म., सेवारत्न पू. श्री हरीश मुनि जी म. आदि ठाणा 4 दिनांक 27/05/2026 बुधवार को सादनगर गाँव से विहार करके कोतूर गाँव जिला हैदराबाद (तेलंगाना) में पहुँचे। चातुर्मास प्रवेश दिनांक 22 /07/2026 बुधवार को श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, खैरताबाद में होगा। प्रेषक : शांतिलाल भलगट जैन

उप-प्रवर्तक श्री विनयमुनिजी म. 'वागीश' का मुंबई विचरण

उपाध्याय श्री कन्हैयालालजी म. 'कमल' के सुशिष्य आगम प्रभावक, उप-प्रवर्तक श्री विनयमुनिजी म. सा. 'वागीश', उप-प्रवर्तक श्री गौतममुनिजी म. 'गुणाकर', तप केसरी श्री संजयमुनिजी म. 'सरल', तत्वचिंतक श्री सागरमुनिजी म. 'शुभम', आदि ठाणा 5, 24-मई-2026 गुरुदेव (सुधा पार्क) घाटकोपर (पूर्व) से विहार करके अजरामर उपाश्रय नेहरु नगर, कुर्ला (पूर्व) में विराजमान है।

धर्म प्रभावक श्री अचलमुनि जी म. का पंजाब-हिमाचल प्रदेश में विचरण

तलवारा (पंजाब) : उत्तर भारतीय प्रवर्तक गुरुदेव पू. श्री आशीष मुनि जी म. के शिष्य धर्म प्रभावक पू. श्री अचलमुनि जी म., वाणी भूषण पू. श्री भरतमुनि जी 'भव्य' जैन स्थानक तलवारा पंजाब में विराजमान है। संभावित विहार यात्रा-चिंतपूर्णी, कांगड़ा, धर्मशाला, मक्लोडगंज, योलकैंप, पालमपुर, सुजानपुर, नादौन है। प्रेषक : रोहित गुरुसेवक

उपप्रवर्तिनी श्री सत्यप्रभा जी म. मंजुनाथ नगर में

श्रमण संघीय उप-प्रवर्तिनी साध्वी पू. श्री सत्यप्रभा जी म. आदि ठाणा 4, सुखसाता पूर्वक जैन भवन, मंजुनाथनगर में विराजमान हैं। प्रेषक : उत्तमचंद आच्छा

महासती पू. श्री सिद्धिसुधा जी म. का लोनावला में चातुर्मास प्रवेश

लोनावला (महाराष्ट्र) : कर्नाटक गज केसरी, घोर तपस्वी प. पू. श्री गणेशलालजी म. की अनुयायी, नवकार आराधिका पू. साध्वी श्री प्रतिभाजी म. की सुशिष्याएं श्रमणी गौरव, स्पष्ट वक्ता महासती पू. श्री सिद्धिसुधाजी म., प्रवचन प्रभाविका, महासतीजी पू. श्री सुविधिजी म. तत्व चिंतिका, महासतीजी पू. श्री समितिजी म. आदि ठाणा 3 का चातुर्मास मंगल प्रवेश 15 जुलाई को श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ लोनावला (पुणे) होगा। प्रेषक : आनंद महिला मंडल

साध्वी डॉ. मेघाश्री जी म. का महाराष्ट्र विचरण

पाटस (महाराष्ट्र) : उप-प्रवर्तिनी डॉ. दर्शनप्रभा जी म. की सुशिष्याऐ साध्वी डॉ. मेघाश्री जी म. आदि ठाणा-3 पाटस गाँव से विहार करके जैन स्थानक वरवन्ड़ गाँव (महाराष्ट्र) में विराजमान है। 2026 का चातुर्मास गुरु पुष्कर भवन शांति नगर कोंडवा रोड़, पुणे महाराष्ट्र चातुर्मास प्रवेश 26 जुलाई रविवार को होगा। प्रेषक : अशोक सालेचा जैन

तप कौमुदी महासती पू. श्री निर्मला जी म. का महाराष्ट्र विचरण

वाशिम (महाराष्ट्र) : आगम गगन चन्द्रिका, महासाध्वी श्री कौशल्या जी म. 'श्रमणी' की प्रशिष्याएं, उप-प्रवर्तिनी महासती पू. श्री प्रमिला जी म. की सुशिष्याएं तप कौमुदी महासती पू. श्री निर्मला जी म., महासती पू. श्री नन्दिनी जी म. ठाणे 5 जैन स्थानक, वाशिम से विहार करके तामसि गाँव, सरकारी स्कूल में सुखे-समाधे पहुँचे। आपका चातुर्मास जालना गुरु गणेश तपोधाम में होगा।

प्रेषक : सुदेश सकलेचा जैन

प्रेस्टीज

प्रतिबद्ध है भारत को समृद्ध एवं प्रबुद्ध बनाने के लिये अपने
सर्वश्रेष्ठ सोया प्रोटीन सोया तेल, वनस्पति, सोया बड़ी गेहूँ का आटा
मैदा, रवा, सूजी और उत्कृष्ट शिक्षा K.G. से Ph.D. के द्वारा
भारत को जरूरत है स्वर्ण पदकों की ओलम्पिक
और नोबल पुरस्कार विजेताओं की
स्वस्थ व प्रबुद्ध भारत के लिये
प्रेस्टीज सोया खाद्य और समग्र शिक्षा
बेहतर भोजन - बेहतर शिक्षा - बेहतर राष्ट्र

प्रेस्टीज फूड्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (अंडर ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज फीड मिल्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (पोस्ट ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज सोया इंडस्ट्रीज	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, ग्वालियर
प्रेस्टीज फ्रोटेक लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, देवास
प्रेस्टीज फीड मिल्स	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड साइंस, इंदौर
प्रेस्टीज फैब्रिकेटर्स प्रा. लिमिटेड	प्रेस्टीज पब्लिक स्कूल, इंदौर

प्रेस्टीज ग्रुप ऑफ इन्डस्ट्रीज एंड इंस्टीट्यूट्स
स्टार एक्सपोर्ट हाउस (भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त) आई.एस.ओ. : 9000 2001 प्रमाणिक ग्रुप
30, Jaora Compound, M.Y.H. Road, Indore - 452001, M.P.
Phone.: 0731-4011111, 4041111 Fax: 4011107, 2704455 E-mail: info@prestigeindia.com Website: prestigeindia.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

त्याग, संयम और गुरु कृपा का संदेश देकर मनाया गया श्री दिनेशमुनि जी म. का 66वाँ जन्मदिवस

बरनाला (पंजाब) : 24 मई 2026 को एस.एस. जैन सभा के तत्वावधान में जैन स्थानक, बरनाला में श्रमण संघीय सलाहकार पू. श्री दिनेशमुनि जी म. का 66वाँ जन्मदिवस रविवार को अत्यंत श्रद्धा, भक्ति और आध्यात्मिक उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर पंजाब, हरियाणा सहित विभिन्न शहरों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु, समाजसेवी एवं जैन समाज के गणमान्य सदस्य उपस्थित हुए।

समारोह में एस.एस. जैन सभा के पूर्व प्रधान प्रेमचंद जैन, प्रधान फूलचंद जैन, मंत्री भुवन जैन, कोषाध्यक्ष वेदप्रकाश जैन, अरिहंत जैन, जगजीवन जैन, ऋषभ जैन एवं विशाल जैन सहित अन्य सदस्यों ने पू. श्री दिनेशमुनि जी म. को आदर स्वरूप चादर भेंट कर सम्मानित किया।

समारोह में डॉ. दीपेंद्र मुनि, डॉ. पुष्पेंद्र मुनि, महासाध्वी प्रियदर्शना, साध्वी किरणप्रभा, साध्वी अर्पिता, साध्वी मोक्षदा, साध्वी वंदिता आदि साधु-साध्वी जी की उपस्थिति रही। समारोह को सफल बनाने में एस.एस. जैन सभा के पदाधिकारियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

जैन दिवाकर रत्न सम्मान से सम्मानित हुए श्री शांतिलाल दोशी

पिपलिया मंडी (मध्य प्रदेश) : अखिल भारतीय श्री जैन दिवाकर संगठन समिति (रजि.) द्वारा जैन दिवाकर रत्न सम्मान से सम्माननीय श्रीमान शांतिलाल दोशी, पिपलिया मंडी को सम्मानित किया गया। समिति के पदाधिकारीगण 27 मई को श्री शांतिलाल दोशी के निवास स्थान पर पहुँचे एवं उन्हें सम्मान पत्र भेंट कर अभिनंदन किया। यह सम्मान उन्हें धर्म, समाज सेवा, सदाचार एवं मानवता के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट एवं प्रेरणादायी योगदान के लिए प्रदान किया गया। इस अवसर पर पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सुनील लाला बम, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष संतोष चोपड़ा, राष्ट्रीय संगठन महामंत्री सिद्धराज संघवी राष्ट्रीय युवा महामंत्री कमलेश दुग्गड़ सहित संगठन समिति के पदाधिकारी एवं सदस्यगण उपस्थित रहे।

शांतिनाथ प्रभु जन्म एवं निर्वाण कल्याणक दिवस मनाया

नई दिल्ली : जैन धर्म के सोलहवें तीर्थंकर भगवान शांतिनाथ प्रभु के जन्म एवं निर्वाण कल्याणक तथा सरलमना महासाध्वी श्री रीटा जी महाराज के दीक्षा जयंती महोत्सव के पावन अवसर पर आयोजित धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

यह प्रेरणादायी कार्यक्रम महासाध्वी श्री रीटा जी म. की सुशिष्या साध्वी श्री निष्ठा जी म. एवं साध्वी श्री देशना जी म. की पावन प्रेरणा एवं दिव्य साधिका महासाध्वी श्री रश्मि जी म. के सान्निध्य में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में भगवान शांतिनाथ प्रभु के आदर्शों, अहिंसा, शांति एवं संयम के संदेश को जन-जन तक पहुँचाने का आह्वान किया गया।

इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष श्री जितेंद्र जैन, ज्ञान प्रकाश योजना के चेयरमैन श्री सुरेश कुमार जैन, राष्ट्रीय मंत्री श्री नरेश जैन जी, दिल्ली प्रदेश प्रांतीय महामन्त्री श्री ललित ओसवाल जैन सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों की गरिमामयी उपस्थिति रही। उनके साथ इस पावन आयोजन में सहभागिता कर धर्म, संस्कृति एवं संस्कारों के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करने का अवसर मिला।

प्रेषक : ललित ओसवाल जैन

बैंगलोर में 'संस्कारों का सूर्योदय' अष्ट दिवसीय 'समकित संस्कार शिविर' का ऐतिहासिक एवं अभूतपूर्व आयोजन

बैंगलोर (कर्नाटक) : बैंगलोर के बिन्नीपेट स्थित श्री गुरु ज्येष्ठ पुष्कर जैन आराधना केन्द्र में 'समकित संस्कार शिविर' का आयोजन किया गया। चातुर्मास समिति 2026 के पूर्ण तत्वावधान एवं कुशल प्रबंधन में आयोजित अष्ट दिवसीय आवासीय महाकुंभ केवल एक आयोजन नहीं, अपितु बालकों के भीतर सोए हुए भगवान महावीर के उत्कृष्ट संस्कारों को जगाने का एक ऐतिहासिक अनुष्ठान सिद्ध हुआ। देशभर से आए लगभग 250 बालक-बालिकाओं ने इन आठ दिनों में अगाध धर्म-श्रद्धा, अनुशासन और ज्ञान-पिपासा का परिचय दिया।

इस संपूर्ण आयोजन को संपन्न कराने का श्रेय 'बैंगलोर चातुर्मास समिति 2026' के चेयरमैन श्री रायचंद छाजेड़, श्री प्रकाश बेताला एवं श्री अशोक रांका तथा शिविर के मुख्य आयोजक व संयोजक श्री शांतिलाल भंडारी एवं श्री रमेश सिसोदिया के कुशल नेतृत्व हुआ। युवा मंडल, महिला मंडल, भवन के ट्रस्टीगण श्री लालचंद जैन ने तन-मन-धन से सहयोग कर इस अनुष्ठान को सफल बनाया। श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस कर्नाटक प्रांत की पूरी टीम, महिला शाखा एवं युवा शाखा इस अद्भुत और अकल्पनीय आयोजन के लिए बैंगलोर चातुर्मास समिति का कोटिशः साधुवाद करती है।

प्रेषक : प्रकाश बुरड़ जैन

जावरा में कस्तूर पावनधाम में भूमि पूजन एवं सामायिक दिवस का आयोजन

जावरा (मध्य प्रदेश) : उपाध्याय पू. डॉ. गौतममुनि जी म., प्रवर्तक पू. श्री विजयमुनि जी म., महासती डॉ. कुमुदलता जी म. ने कस्तूर पावनधाम लोकार्पण एवं भूमि पूजन समारोह में उपस्थित श्रद्धालुओं को अपने प्रवचन से लाभान्वित किया। भूमि पूजन के अतिथि श्री समरथमल ओस्तवाल, जैन कॉन्फ्रेंस के विश्वस्त मण्डल के चेयरमैन श्री रमेश भंडारी जैन के अलावा श्री जयंतिलाल डांगी जैन, श्री इंदरमल जैन, श्री महेंद्र कुमार बोथरा जैन, श्री प्रदीप कीमती जैन, श्री संतोष चोपड़ा जैन, श्री पारसमल मेहता जैन, श्री मणिलाल कटारिया जैन रहे।

वहीं जावरा में उपाध्याय पू. डॉ. गौतम मुनि जी म. की पावन प्रेरणा से नवनिर्मित श्री कस्तूर पावनधाम, जावरा रोड़ पर सामूहिक सामायिक दिवस के रुप में मनाया गया। सामायिक में पधारने वाले महानुभावों की नवकारसी का लाभ श्रीमती झम्मुबाई रतनलाल मेहता द्वारा लिया गया। जाप में पूर्वाध्यक्षद्वय पारसमल बरडिया, पुखराजमल कोचट्टा के साथ कस्तूर पावनधाम के अध्यक्ष राकेश मेहता, जैन कॉन्फ्रेंस आत्म-ध्यान योजना के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री संदीप रांका आदि उपस्थित थे।

प्रेषक : संदीप रांका

जैन कॉन्फ्रेंस तमिलनाडु युवा शाखा द्वारा जीव-जगत कल्याण हेतु 'नवकार महामंत्र अनुष्ठान' सम्पन्न

चेन्नई (तमिलनाडु) : 28 मई 2026 को जीव-जगत कल्याण हेतु 'नवकार महामंत्र अनुष्ठान' का आयोजन जैन कॉन्फ्रेंस युवा शाखा, तमिलनाडु एवं श्री एस.एस. जैन संघ, वेपेरी के संयुक्त तत्वावधान में श्रद्धा एवं भक्ति भाव से सम्पन्न हुआ। तीन घंटे तक चले इस जाप अनुष्ठान में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने सहभागिता कर पुण्य लाभ प्राप्त किया। सर्वप्रथम पू. श्री राजेश मुनिजी म. का चिंताद्रिपेट से वेपेरी तक मंगल विहार हुआ। अनुष्ठान के दौरान उपस्थित सभी श्रद्धालुओं ने जाप का संकल्प लेकर जीव दया, करुणा एवं अहिंसा का संदेश जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प लिया। आयोजकों ने कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु सभी सहयोगकर्ताओं, कार्यकर्ताओं एवं उपस्थित महानुभावों का हार्दिक आभार व्यक्त किया। प्रांतीय युवा अध्यक्ष श्री मनीष रांका जैन ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का समापन मंगल पाठ एवं नवकार मंत्र के सामूहिक जाप के साथ हुआ।

भारत सरकार में केंद्रीय मंत्री माननीय श्री नितिन गडकरी का उनके जन्म दिवस के अवसर पर नागपुर आवास पर सत्कार करते हुए जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय मंत्री वसंत लोढ़ा जैन साथ में, श्री अभय अगरकर, सचिन पारखी, जालिंदर वाकचोरे।

With Best Wishes :
R.Mahaveer Chand Ranka
Rajesh kumar-Aarti Jain Vinod kumar-Seema Jain
Dr Rohit, Mohit, Shruthi, Shubh kumar, Aditi Jain

JAIN JEWELLERY 916 HALL MARK SHOWROOM POLUR
JAIN SILKS & READYMADES Fashion for Family POLUR
varnalaya EXCLUSIVE DESIGNER WEDDING COLLECTION POLUR TIRUVANAMALAI VILLUPURAM
JAIN PETRO Reliance Petroleum Retail Outlet, Diversion Road, Polur 606-803
OXFORD MATRIC HR. SEC SCHOOL
OXFORD COLLEGE OF ENGINEERING POLUR

R.Mahaveer Chand Ranka
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक - जैन कॉन्फ्रेंस
9444204046
E mail : rmrjainplr@gmail.com

M. Rajeshkumar Ranka
प्रान्तीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस, तमिलनाडु
9994916455
E mail : rajplr246jj@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश

PRGI : DLHIN/25/A4261
Postal Regn. No. DL(ND) 11/6078/2026-27-2028
U(C)-312/2026-28

Date of Publication : 01-06-2026
Date of Posting : 07/08-06-2026
E-mail : aissjc1906@gmail.com

भाषा : हिन्दी ✲ अंक : 13 ✲ पृष्ठ : 8
माह : जून ✲ सप्ताह : 01 जून से 07 जून

मूल्य : ₹ 10

सह-सम्पादक : जसवंत जैन-दिल्ली, पीयूष जैन-इंदौर, गौतम दुगड़ जैन-चेन्नई

स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के गौरवशाली महापुरुष श्रृंखला...

सदधर्म-क्रांतिवीर श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह : स्थानकवासी इतिहास-लेखन, जैन पत्रकारिता और संघ-जागरण के अग्रदूत!

- प्रो. डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत

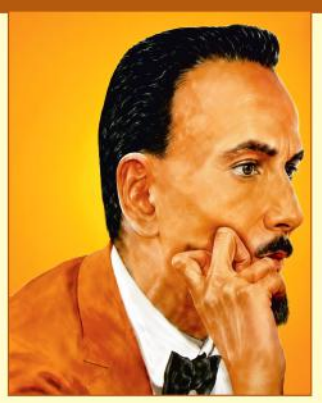

स्थानकवासी जैन समाज के इतिहास में कुछ व्यक्तित्व ऐसे हुए हैं जिन्होंने केवल अपने समय को ही प्रभावित नहीं किया, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए वैचारिक आधार भी निर्मित किया। सदधर्म-क्रांतिवीर श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह उन्हीं विलक्षण विभूतियों में से एक थे। अहमदाबाद की धरती पर जन्मे इस तेजस्वी युवा ने अल्पायु में ही जैन पत्रकारिता, स्थानकवासी इतिहास-लेखन, संघीय संगठन और वैचारिक नवजागरण के क्षेत्र में जो कार्य किए, वे आज भी श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के इतिहास में गौरव के साथ स्मरण किए जाते हैं।

श्री वाडीलाल शाह ऐसे समय में सामने आए जब स्थानकवासी समाज सामाजिक और वैचारिक संक्रमण के दौर से गुजर रहा था। उनके पिता श्री मोतीलाल भाई स्वयं साहित्य और पत्रकारिता से जुड़े हुए थे तथा 'जैन समाचार' नामक पत्र का संचालन करते थे। इसी वातावरण ने वाडीलाल शाह को अध्ययनशील, चिंतनशील और निर्भीक बनाया। युवा अवस्था में ही वे स्थानकवासी जैन समाज के सर्वाधिक पढ़े-लिखे और वैचारिक दृष्टि से प्रखर नवयुवकों में गिने जाने लगे थे।

उन्होंने बहुत कम आयु में लेखन प्रारम्भ किया और शीघ्र ही जैन समाज में एक प्रभावशाली पत्रकार, चिंतक और लेखक के रूप में प्रतिष्ठित हो गए। उनकी भाषाशैली ओजस्वी, तर्कपूर्ण और जनजागरणकारी थी। वे केवल धार्मिक उपदेशक नहीं थे, बल्कि समाज को आत्ममंथन के लिए प्रेरित करने वाले वैचारिक क्रांतिकारी थे।

उनकी साहित्यिक कृतियों में 'मधु मशिका', 'हितशिक्षा', 'राजर्षि', 'संसार में सुख कहाँ है?', 'कबीर के पद', 'श्री दशवैकालिक सूत्र रहस्य', 'श्री महावीर कहता है', 'पर्युषण', 'जैन दीक्षा', 'भरतविलास' और 'पॉलिटिकल गीता' जैसे ग्रंथ विशेष उल्लेखनीय हैं। इन रचनाओं में धर्म को जीवन-व्यवहार, आत्मानुशासन और सामाजिक चेतना के साथ जोड़ा गया है। उनके लेखन का प्रभाव केवल जैन समाज तक सीमित नहीं रहा, बल्कि व्यापक बौद्धिक वर्ग तक पहुँचा।

किन्तु श्री वाडीलाल शाह का सबसे ऐतिहासिक और दूरगामी योगदान स्थानकवासी जैन परंपराओं के इतिहास - संकलन के क्षेत्र में माना जाता है। उनकी महत्वपूर्ण कृति 'ऐतिहासिक नोंद संग्रह' विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इस ग्रंथ में उन्होंने उस समय गुजरात और राजस्थान क्षेत्र की विभिन्न स्थानकवासी परंपराओं, आचार्य परंपराओं और संघीय शाखाओं की पट्टावलियों को एकत्रित करने का महान कार्य किया। यह कार्य आज के संदर्भ में अत्यंत सामान्य प्रतीत हो सकता है, किन्तु उस कालखंड में जब संचार के साधन सीमित थे और विभिन्न परंपराओं के अभिलेख बिखरे हुए थे, तब यह एक अद्वितीय ऐतिहासिक परियोजना थी।

बताया जाता है कि इस सामग्री के संकलन हेतु उन्होंने तत्कालीन प्रतिष्ठित आचार्य श्री सोहनलाल जी महाराज सहित गुजरात क्षेत्र के अनेक स्थानकवासी आचार्यों, साधुओं और संघों से व्यक्तिगत संपर्क स्थापित किया। उन्होंने विभिन्न परंपराओं की पट्टावलियों, गुरु-शिष्य परंपराओं, संघ-इतिहास और साधु-साध्वी वंशावलियों को एक स्थान पर संकलित कर स्थानकवासी जैन इतिहास को संरक्षित करने का कार्य किया। वस्तुतः यह केवल साहित्यिक कार्य नहीं था, बल्कि स्थानकवासी परंपरा की ऐतिहासिक स्मृति को बचाने का एक गंभीर प्रयास था।

आज जब स्थानकवासी जैन इतिहास के शोधकर्ता विभिन्न परंपराओं की कड़ियों को जोड़ने का प्रयास करते हैं, तब श्री वाडीलाल शाह द्वारा संकलित सामग्री का महत्व और अधिक स्पष्ट हो जाता है। उनकी यह दृष्टि दर्शाती है कि वे केवल पत्रकार नहीं, बल्कि इतिहास-संरक्षक और दस्तावेजीकरण की महत्ता को समझने वाले दूरदर्शी चिंतक थे। ऐतिहासिक स्रोतों और पाट्टावलियों के संरक्षण की परंपरा भारतीय अभिलेखीय चेतना का महत्त्वपूर्ण अंग रही है।

श्री वाडीलाल शाह का जीवन श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस से विशेष रूप से जुड़ा हुआ था। उन्होंने जैन कॉन्फ्रेंस को केवल एक संगठन नहीं, बल्कि स्थानकवासी समाज की वैचारिक और सामाजिक शक्ति के रूप में देखा। बीकानेर अधिवेशन के समय श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष (प्रमुख) के महत्वपूर्ण दायित्व सहित अनेक गतिविधियों में उनकी प्रमुख भूमिका रही। संघ-एकता, शिक्षा-विस्तार और वैचारिक सुधार के प्रश्नों पर उन्होंने जैन कॉन्फ्रेंस के मुखपत्र "जैन प्रकाश" के माध्यम से व्यापक जन-जागरण किया। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि जैन कॉन्फ्रेंस के पद दायित्व के समय में पूरे देश में घूम-घूम कर उन्होंने "स्थानकवासी जैन" शब्द की व्याख्या करते हुए संपूर्ण समाज से "स्थानकवासी" शब्द को मान्यता दिलाने का महत्वपूर्ण काम किया क्योंकि इससे पूर्व स्थानकवासी जैन समाज को ढूंढया, मुँहपट्टी वाले, साधुमारगी या लोकागच्छ आदि अनेक नाम से बुलाया जाता था। उनके लेखों ने स्थानकवासी समाज में संगठनात्मक चेतना और आत्मविश्लेषण की नई धारा उत्पन्न की।

उनकी पत्रकारिता भी उतनी ही निर्भीक थी। "जैन प्रकाश", 'जैन समाचार' और 'जैन हितेच्छु' जैसे पत्रों के माध्यम से उन्होंने धार्मिक कुरीतियों, सामाजिक संकीर्णताओं और संघीय विभाजनों पर खुलकर लेखन किया। वे मानते थे कि समाज की उन्नति सत्य और आत्मसमीक्षा से ही संभव है। यही कारण था कि कई बार उन्हें विरोध का सामना भी करना पड़ा, किन्तु उन्होंने अपने सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया।

इतना सब होने के बावजूद समाज उनके योगदान का पूर्ण मूल्यांकन उनके जीवनकाल में नहीं कर सका। दुर्भाग्यवश, यह प्रतिभाशाली व्यक्तित्व बहुत कम आयु में ही संसार से विदा हो गया। उनकी अकाल मृत्यु ने स्थानकवासी जैन समाज, विशेषकर जैन पत्रकारिता और इतिहास-लेखन की परंपरा को गहरी क्षति पहुँचाई। यदि उन्हें अधिक समय मिलता तो संभवतः स्थानकवासी जैन इतिहास का और भी अधिक व्यवस्थित साहित्य आज हमारे सामने होता।

फिर भी, अपने संक्षिप्त जीवनकाल में श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह ने जो वैचारिक विरासत छोड़ी, वह आज भी प्रेरणा का स्रोत है। वे इस सत्य के जीवंत उदाहरण हैं कि एक सजग लेखक, निर्भीक पत्रकार और इतिहास-संरक्षक समाज की दिशा बदल सकता है। स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के इतिहास में उनका नाम एक ऐसे युगनिर्माता के रूप में सदैव स्मरणीय रहेगा जिसने कलम को समाज-जागरण और इतिहास-संरक्षण का माध्यम बनाया।

जैन गौरव

अमर शहीद गौतम जैन

29 मई 1979 को मुंबई में जन्में इंदौर में पढ़े गौतम जैन ने 1999 में राष्ट्रीय रक्षा एकेडमी बैच से पास आउट कर इंडियन मिलिट्री एकेडमी देहरादून से मई 2000 में कमीशन प्राप्त किया। लेफ्टीनेंट गौतम जैन को कश्मीर के राजोरी जिले में तैनात किया गया। 1 नवम्बर 2001 को एक छिपे हुए आतंकवादी ने सेनानायक गौतम जैन के ऊपर अंधाधुंध गोलियाँ बरसाई उसके बाद भी आगे आ कर तीन आतंकवादियों को मौत के घाट उतार दिया और भारत माता की जय बोलते हुए अंतिम साँस ली। भारतीय सेना के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अपनी शौर्य गाथा रचने वाले इस वीर को भारत शासन द्वारा स्पेशल सर्विस मेडल सुरक्षा व बेज ऑफ सेक्रीफाइस एवं सर्टिफिकेट ऑफ ऑनर दिया गया। कमांडिंग ऑफीसर 173 फील्ड रेजिमेंट द्वारा अशोक चक्र से सम्मानित किया गया।

विनम्र श्रद्धांजलि...

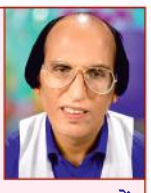

"स्मृति शेष शायर बशीर बद्र के दस सर्वाधिक चर्चित और लोकप्रिय शेर! इनमें प्रेम, मानवीय संबंध, सामाजिक संवेदना, जीवन-दर्शन और समय की विडंबनाएँ अत्यंत सरल भाषा में व्यक्त हुई हैं। यही कारण है कि बशीर बद्र को हिंदुस्तान का सबसे लोकप्रिय शायर माना जाता है।"

1. लोग टूट जाते हैं एक घर बनाने में,
   तुम तरस नहीं खाते बस्तियाँ जलाने में।
2. कोई हाथ भी न मिलाएगा जो गले मिलोगे तपाक से,
   ये नए मिजाज का शहर है, जरा फासले से मिला करो।
3. दुश्मनी जम कर करो लेकिन ये गुंजाइश रहे,
   जब कभी हम दोस्त हो जाएँ तो शर्मिंदा न हों।
4. उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो,
   न जाने किस गली में जिंदगी की शाम हो जाए।
5. हर धड़कते पत्थर को लोग दिल समझते हैं,
   उम्र बीत जाती है दिल को दिल बनाने में।
6. मोहब्बतों में दिखावे की दोस्ती न मिला,
   अगर गले नहीं मिलता तो हाथ भी न मिला।
7. घरों पे नाम थे, नामों के साथ ओहदे थे,
   बहुत तलाश किया, कोई आदमी न मिला।
8. यूँ ही बे-सबब न फेरा करो, कोई शाम घर में रहा करो,
   वो गजल की सच्ची किताब है, उसे चुपके-चुपके पढ़ा करो।
9. शोहरत की बुलंदी भी पल भर का तमाशा है,
   जिस शाख पर बैठे हो वो टूट भी सकती है।
10. कितनी सच्चाई से मुझ से जिंदगी ने कह दिया,
    तू नहीं मेरा तो कोई दूसरा हो जाएगा।

- जैन प्रकाश सम्पादकीय टीम...

सम्पादकीय अस्वीकरण : 'जैन प्रकाश' में प्रकाशित समाचार, लेख एवं विचार संबंधित लेखकों/समाचार प्रेषकों/अन्य स्रोतों के निजी विचार हैं। उनकी सत्यता एवं प्रामाणिकता के लिए वही उत्तरदायी होंगे। संपादक एवं प्रकाशक किसी भी त्रुटि, मानहानि या विवाद के लिए उत्तरदायी नहीं होंगे। यह प्रकाशन भारतीय प्रेस एवं पंजीकरण अधिनियम, 1867 तथा लागू भारतीय कानूनों के अंतर्गत है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा। - डॉ. अमित जैन (सम्पादक/प्रकाशक)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक एवं प्रकाशक अमित जैन द्वारा मुद्रक पारस ऑफसेट प्रा.लि., 118-F, सेक्टर 56, फेज 5, कुंडली इंडस्ट्रियल स्टेट, सोनीपत - 131 028 द्वारा मुद्रित।
केन्द्रीय कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली - 110 001 से प्रकाशित ✲ सम्पर्क : 90197 31906